❀ ओम् ❀

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र

और

विज्ञापन ।

[illegible] १९८० - [illegible] ८४

चतुर्थ भाग

पण्डित भगवद्दत्त अनुसन्धानाध्यक्ष

दयानन्द कालेज, लाहौर

द्वारा

सम्पादित

आर्य्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा सिन्ध, पञ्जाब,

बलोचिस्तान ने प्रकाशित किया

जुलाई १९२७

प्रथम वार १००० प्रति] [मूल्य ।=)

मुद्रक—पं० महावीरप्रसाद "विद्याप्रकाश प्रेस" अनारकली लाहौर ।

COMPILED

७२८५

ओम्

पाठकों से निवेदन

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन का यह चतुर्थभाग जनता के प्रति भेंट किया जाता है। इसमें जो पत्र छापे गये हैं, वह एक दो को छोड़ कर, पहली वार ही प्रकाशित किये जाते हैं। इनमें से अधिकांश पत्र फरुखाबाद से प्राप्त किये गये हैं। इनके प्राप्त करने का श्रेय महाशय मामराज जी का है। उन्होंने निरन्तर कई मास फरुखाबाद का वास करके लाखों पुराने रद्दी पत्रों में से ये पत्र निकाले हैं। फरुखाबाद समाजके पुराने सभासद पं० गणेशप्रसाद जी ने भी इस कार्य में विशेष सहायता दी है। उनका मैं आभारी हूं। पत्रों की खोज के लिये १२०) रु० श्रीमान् जस्टिस बख्शी टेकचन्दजी ने दिये थे। उनका मैं बड़ा कृतज्ञ हूं। पर पत्रों की खोज पर १२०) रु० तो क्या ५००) रु० से भी अधिक व्यय अभी तक हो चुका है। आगे भी निरन्तर हो रहा है। मेरे लिये इतना व्यय करना बड़ा कठिन है। क्या कोई आर्य इस विषय में सहायता करेंगे। पांचवां भाग शीघ्रही अजमेर से छपेगा। विस्तृत भूमिका अन्त में ही लिखी जायगी।

लाहौर ६-७-२७ भगवद्दत्त

* ओम् *

ऋषि दयानन्द सरस्वती

के

पत्र और विज्ञापन।

चतुर्थ भाग।

(१) न० २५८ (१८८)

ठाकुर भूपालसिंहजी आनन्द रहो।

विदित हो कि ठाकुर रणजीतसिंहजी ने रुपया हमारे पास भेज दिया है। परन्तु ठाकुर मुकुन्दसिंह ने अब तक रुपया नहीं भेजा। और पहले उनकी यहां दो तीन चिट्ठियां इस विषय की आईं कि रुपया हमारे पास मौजूद और तय्यार रक्खा है कहां भेज देवें। सो उनको कई बार लिख चुके कि हमारे पास भेजो। अब वे फिर चुप हो बैठे। इसका कारण ही मालूम नहीं होता कि क्या भेद है। और रुपये की हम को बहुत ज़रूरत है। इस लिये एक बार लिखा जाता है कि उन से फ़र्रुखाबाद शहर की हुँडी बनवा कर यहां हमारे पास भिजवादो। ताकीद जानो। और हम बहुत आनन्द में हैं।

रुड़की जि० सहारनपुर }
६ अग० १८७८ }

{ हस्ताक्षर
{ दयानन्द सरस्वती

(२) (उर्दू पत्र) (१८९)

जनाब मुंशी इन्द्रमन जीव साहब आनन्दित रहिये।

नमस्ते। ५९९ पांचसौ निनानवें जिल्द सन्ध्या भाष्य मुरसले आप की पहुंची। हस्बुल ईमा आपके मैं यहां चन्द्रिका तलाश कर रहा हूं। अनकरीब बशरते दस्तयाबी अरसाल खिदमत होगी। कैफ़ीयत यहां की यह है कि जमीअ असबाब छापेखाने का मय कागज व रौशनाई व प्रूफ सीट वगैरा के कलकत्ता से यहां आ गया। व ५ पांच मन टाइप तो राजा साहब ने मुरादाबाद से मेरे पास भेज दिये हैं। व करीब ८ आठ मन के कलकत्ते से खरीद किये गये हैं। ग़रज़ कि अन्दर एक महीनेके कार छापे खाने का इजरा हो जावेगा। मेरा कस्द है कि पेशतर शिक्षा पुस्तक जो छोटी व हाल में तसनीफ हुई है छपवाई जावे। व बाद उसके दूसरी किताबें जो काबिल नविश्त खवांद हैं छपवाई जावें। व जब कार छापेखाने का बखूबी इजरा हो जावेगा तब बम्बई से बुला वेदभाष्य का कारखाना उठवा कर बनारस में जारी किया जावेगा।

अब यहां रुपये के लिए कमाल दिक्कत है। व यह कारखाना सिर्फ आप लोगों की उम्मीद पर चलाया जाता है। आगाज़करदए सास मासाह।

इसलिये आप बराये मेहरबानी ला० श्यामसुन्दर से कह कर अरदूनी महकमा जहां २ जिस कदर रुपया जमा हो यकजा कराकर मेरे पास भेज दीजिये। ताकि इजराय कार में तवक्कुफ व तसाहुल न हो। अब बनिसबत निकालने अख़बार के क्या कस्द हैं। मेरी दानिस्त में तो अगर अख़बार अंग्रेज़ी व हिन्दी व उर्दू तीनों एक ही परचे में हों तो निहायत मुनासिब होगा। या जैसी राय शरीफ हो वही अनसब है।

बराय मेहरबानी दर्बारे निकालने अख़बार के जो तजवीज़ आप की मुसम्मिम हो उसको तहरीर फरमाइये। बाकी कैफीयत यहां की बदस्तूर है। हनूज़ यहां के पंडित शास्त्रार्थ करने के लिये मुसतइद नहीं हुए। जैसा हाल होगा उससे आप को मतले करूंगा। फक्त १० जनवरी सन् १८८० ई०।

दस्तखत

द० [दयानन्द सरस्वती]

---

(५) (१९०)

ओम्

बाबू दुर्गाप्रसादजी आनन्दित रहो।

हम यहां हद्द आठ दिन रहेंगे। और करनेल ओलकाट साहिब और मेडम भी कल यहां से चले गये। रमा भी कल यहां से जावेगी। लेखक को आप जल्दी मेरठ में हमारे पास भेज दीजिये जब तक हम यहां हैं। १००) जो आप ने मुंशी इन्द्रमणी जी के विषय में इकट्ठे किये हैं वे मेरठ आर्य्य समाज के उप प्रधान लाला रामशरण दास जी के पास भेज दीजिये उन्हीं के नाम से क्योंकि सब जगह का यहां जमा होता है। और यहां से खर्च होता है। रमाबाई अपने घर को जाने कहती है। यहां समाज से १२५) रुपैये और एक थान मलमल का दे कर सत्कार किया। कल यहां से दिल्ली और दिल्ली से इलाहाबाद, वहां से घर जायगी। अभी किसी समाज में नहीं जाने कहती है। शायत् वहां से आवे तो जाय। इस के भाई के मरने से इसकी "कुछ कुचाली हो गई है" ऐसा लोग संशय करते हैं। चित्त भी चंचल है। शरीर पतला निर्बल और रोगी

है। गुस्सा भी बहुत है। इसकी "कुचाली" में जो लोग "शंका करते हैं" वह लिखने "योग्य नहीं है"। हमने इसको वैशेषिक और न्याय दर्शन के कुछ सूत्र पढ़ाये हैं। समझाई भी बहुत है। आशा है "कि कुचाली" को छोड़ कर उपदेश मार्ग में प्रवृत्त हो जावेगी। इस के साथ मे बंगाली लोग हैं। वे ही इस की कुमति का कारण हैं। कहती है कि मैं देश में जाकर वहां से अपने किसी कुटुंबी एक पुरुष और एक औरत रोटी करने वाली साथ में ले कर आऊंगी। इसकी बुद्धि बहुत अच्छी और सुबोध है। काव्यालंकार, कुछ व्याकरण, वाल्मीकी रामायण, महाभारत इतना पढ़ी हैं। संस्कृत बहुत अच्छा बोलती है। व्याख्यान बहुत अच्छा देती है। "परसों रविवार को" गोपालराव हरि ने इस के बुलाने के लिये चिठी भेजी थी। सो यह कहती है कि अभी तो हम देश को जायंगे। फिर वहां से [आ]वेंगे तब देखी जायगी। जादा क्या लिखना। और तो सब प्रकार से अच्छी है परन्तु जैसे "चन्द्रमा में ग्रहण लग जाय" ऐसो हाल है। रमा के इस हाल को प्रसिद्ध हर जगह न होना चाहिये। उनके भाई का शोक तो निवृत्त हो गया है।

मुंशी इन्द्रमणी जी के विषय में ३००) रू० मेरठ से ३००)रू० मुरादाबाद से इकट्ठे हुए हैं। और भी मुरादाबाद और चंदोसी चन्दा होगा। इन में से ६००) रू० बालिष्टर को दिये गये और बाकी मिती पर फिर काम पड़ेगा तब भेजे जायंगे। ये सब रूपैये यहां ही जमा होते हैं। उन के पास एक ही वखत भेजना अच्छा नहीं है। जो ऐसा होता तो इतनी जगह मामला क्यों बढ़ना। उन नें वालिष्टर को पहिले पांच सौ रूपैये दिये थे। फिर

१ सौ रू० पीछे से पहुंचाये गये। इस तरह का हाल है। मुकद्दमा तारीख १८ को जारी होगा। यहां से दो एक दिन पहिले लाला रामशरण दास जायंगे। और बाकी रूपैये भी लेते जायंगे। आप भी मुंशी जी को लिख भेजिये कि उपर लिखे मुताबिक मेरठ में रूपैये भेजदिये। रामनाथ लेखक को ७ दिन के भीतर मेरठ में भेज दीजिये। सब से हमारा नमस्ते कह देना। हम आनन्दित हैं। आप लोग आनन्दित होंगे। मिती भाद्र सुदी ४ बुध० संवत् १९३७।*

[दयानन्द सरस्वती]

---

(६) ॥ ओं ॥ (१९१)

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

लेखक रामनाथ कल सप्तमी शनिवार को हमारे पास पहुंचा। और आज लिखने का भी प्रारम्भ करा दिया है। जैसा होगा वैसा पीछे लिखा जायगा। अब हम यहां से १२ गुरु वार को ४ बजे की रेल में मुजफ्फर नगर जायंगे। मुंशी इन्द्रमणि जी के विषय में जो आपने १००) रूपैये चन्दा किये हैं वे क्या अपने ही पास रखनी की इच्छा है। हमने कई वखत लिखा है कि मेरठ आर्य्य समाज के उपप्रधान लाला रामशरण दास के पास भेजदो। क्यों नहीं भेजते हो। मुंशी इंद्रमणि जी [के] पास नहीं भेजना। वहां जाने से व्यर्थ ही खर्च कर देंगे। हम ने यह कहा है कि मुकद्दमे में यथोचित खर्च होकर जो बाकी

---

* ८ सित० १८८०। उलटे कामों में छपा पाठ श्री स्वा० जी ने काटा हुआ है।

बचेगा वह इकट्ठा जमा रहेगा कि जब फिर भी कभी इसी तरह समय काम आवे। इस मुकदमें के हुए पीछे जिन्होंने जितना रुपया दिया है छपाकर सब प्रकाश किया जायगा। और सितंबर की १८ वीं तारीख को मुकदमा जारी होगा।

मुम्बई में पण्डित के विषय में हमने पत्र लिखा। वहां से रूपैये आगये वा नहीं।

मथुरा से दूसरा पण्डित बुलाया है। आशा है कि उस के आने से वेदभाष्य का अच्छी तरह से काम चलेगा। अभी यजुर्वेद के ७ वे अध्याय का ३३ वें मंत्र का भाष्य हो रहा है।

सब से हमारा नमस्ते कह देना। हम आनन्दित हैं। आप लोग आनन्दित होंगे।

मिती भाद्र सुदी ८ रवि वार संवत् १९३७।*

२०) रूपैये फीरोजपुर से जो विषणु सहाय मंत्री आर्य्य समाज फिरोजपुर ने पण्डितों के विषय मे भेजे हैं जमा कर लिये जायं। [दयानन्द सरस्वती]

(७) ओं तत्सत् (उर्दू पत्र) (१६२)

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्द रहो।

पत्र आप का आया। समाचार मालूम हुआ। रामनाथ पहुंच गया। सो विदित हुआ। हम यहां ८ आठ दिन और रहेंगे। और ३ अकतूबर को वार्षिक उत्सव पर जायेंगे। बाद इसके शायद देहरादून को जायें। मुंशी इन्द्रमन का मुआमला

* १२ सितम्बर १८८०।

साहब जज ने भी कुछ अच्छा कुछ बुरा किया है। अर्थात् ५०० पांच सौ रुपया जुर्माना में से ४०० रुपया वापिस किये और १०० सौ रुपया रखे। और बाकी साहब मैजिस्ट्रेट की राय बहाल रखी। और उससे अधिक बुरा राय ऐसी दी की उसने ३ तीन बात फोहश लिखी है। इस ने यानी जज ने सब किताब को फोहश बतला दिया। इस में भी कुछ पक्षपात हुआ। अब यह मुआमला शायद हाई कोर्ट को जायगा। देखा जाय कि वहां से क्या होता है। और भी जज साहब ने लिखा है कि यह मुआमला सब हिन्दुओं का नहीं है खास मुंशी इन्द्रमन का है। उसकी यह बड़ी भूल है। लेकिन हाकिम है जो चाहा सो लिख दिया।

एक पण्डित मथुरा से यहां आया था। चार दिन रह कर चला गया। उस को आने जाने का खर्च दिया गया है। और असूज के अन्त में फिर आवेगा। फिर खर्च दिया जावेगा। अब आप ही तहरीर फरमाईये कि उस का माहवारी क्या मुकर्रिर किया जावे। आप के पास माहवारी असल मा सूद कहां तक हो गया है।

"और आर्यसमाज वाले अलहदा बैठने का खुशी नहीं करते। कहते है घूमे बिना अच्छा नहीं है। तुम्हारी इस में क्या राय है। लेकिन मैं जानता हूं कि बहुत घूमने में हर्ज होगा। मगर इस में कि जहां जायें दो दो एक एक महीना ठहरें तो हर्ज कम होगा"। और बड़े पंडित तो अब मिलते नहीं कि जिसको पचास या साठ रुपया दें। लेकिन अब बेहतर है कि छोटे छोटे यानी एक एक विद्या का जानने वाला कम तनखवाह वाला रखकर

काम निकाला जावे। यानी चार पांच रखे जायेंगे। और उस से भी वैसा ही काम लिया जावेगा। यानी हर एक के एक एक काम स्पुर्द कर दिया जावेगा। हम आनन्द हैं। सब से नमस्ते कह देना।

[दयानन्द सरस्वती]

---

(८) ओ३म (१६३)

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

नमस्ते—पत्र आपका ता० २१ अक्टूबर स० ८० को हमारे पास पहुंचा। समाचार सब मालूम किया। मास्टर शादीराम जी कि जो अंग्रेज़ी और फ़ारसी में खूब हुश्यार और रईस आदमी हैं, उनको मेरठ से बनारस को भेजा गया है। मास्टर मज़्कूर काम अंग्रेज़ी और फ़ारसी का और तोता राम जी नागरी का और भीमसेन जी सोधने वग़ैरा का काम करेंगे और सन्नूलाल वापिस आवेंगे। मगर माहवारी खर्च कि जैसे मुन्शी और शोधने वाले के ३५ रुपये हैं। जिन में से ३०) बख्तावरसिंह लेता था। और ५) भीमसेन को मिलते थे। सो अब दोनों काम यानी शोधना व मुन्शी का कुल ३०) रुपये में होना चाहिये। दोनों आदमियों को वह रुपये जैसे मुनासिब मालूम होंगे, हस्ब लियाक़त दिये जाएंगे। और मास्टर शादीराम बिल्फ़ेल वास्ते देखने और समझने काम के भेजे गये हैं। अगर वहां का काम उन से चला और समझ में आगया तो रहेंगे। वर्ना खैर और कुछ तजवीज़ मुनासिब की जावेगी।

और पं० गोपाल राव हरी को हम अलहदे पत्र लिखेंगे। और पाठशाला की पुस्तकों की बाबत जो लिखा है। सो ऐसा

करना चाहिये। कि जो जो पुस्तक तैयार होती जाएं, सो सो जमायत बन्दी में शामिल करते रहना। यथायोग्य। और हम को फुर्सत कम रहती है। हम भी कक्षा बनावेंगे। और दूसरा निवेदन जो बाबू शिवप्रसाद ने छापा है उसका उत्तर भी तैयार होगया है। सो पं० ज्वालादत्त के नाम से अब जारी किया जायगा।

यजुर्वेद का ८ ऽध्याय पूरा होने को आया है। ज्वालादत्त के आये पश्चात् ३ ऽध्याय का भाष्य बन चुका है।

तारीख़ २१ अक्टूबर सन् १८८०।

(दयानन्द सरस्वती)

---

(४) कार्ड (१६४)

लाला काली चरण राम चरण जी आनन्दित रहो। और मैं देहरादून से यहां आया। चोबे तोताराम की गफ़लत से पुस्तकों का अस्त व्यस्त हो जाना है। और अब मैं यहां से दो चार दिनों में आगरे को जाऊंगा। और वहां मैं १ महीना रहूंगा। और मास्तर शादीराम जी की ज़ामनी लाला रामशरणदासजी ने कर दीनी है। और मुंशी बख्तावर सिंह जी की चिठ्यों से मालूम हुआ कि उन के ऊपर कानून से पेश आना चाहिये। सो ठाकुर मुकंदसिंह जी भूपालसिंह जी मुखतार हैं। सब काम कर लेंगे। सं० १९३७ मि०मा०व० ४ रविवार। *

(दयानन्द सरस्वती)

---

* २१ नवम्बर १८८०।

(५) नं० १० (१९५)

मंत्री आर्य्यसमाज आनंदित रहो। प्रकट हो कि पत्र तुम्हारा आया हाल मालूम हुआ। आज गूजरां वाला से अभी लाला मूलराज एम. ए. की चिट्ठी आई है। सो वहां कुछ प्रसिद्ध नहीं। और मित्र विलास तो विरोधी है। वह सदैव इसी प्रकार लिखता रहता है। जो वह कुछ प्रतिष्ठित होता तो लाहोर आर्य्य समाज ही उसका सहायक होता। सो तुम कुछ शंका न करो। और जैन जाति तो अत्यंत ही दुष्ट है॥ जो तुमको कुछ उनके विषय में लिखना हो तो आर्य्य समाज गूजरांवाले से दर्य्याफ्त करलो॥ और हम सब प्रकार से आनंद में है॥ सभासदों को नमस्ते॥

आगरा हस्ताक्षर

८ दि० १८८० (दयानन्द सरस्वती)

(१) ओ३म् (१९६)

पं० गणेश प्रसाद जी आनन्दित रहो।

तुमसे जो साथ रहने के विषय में बात चीत हुई थी जिस का उत्तर विचार के देना कहा था सो क्या निश्चय किया। तुम्हारी शीघ्र और सुप्रचार लेख शैली से भाषा सम्बन्धी कार्य में सुगमता रहेगी। तुम्हारा संस्कृत बोध जो अधूरा लघुकौमुदी मात्र का है मेरे साथ में अच्छा हो जायगा। और व्याख्यान देने की शैली भी आजायगी। योग्यता बढ़ने पर वेदभाष्य के प्रूफ को

शोधन भी करना होगा। तब मासिक वेतन में वृद्धि की जाय गी। इस का उत्तर मंत्री जी के पत्र में लिख भेजना।

१० दिसम्बर १८८० ई० आगरा हस्ताक्षर

(दयानन्द सरस्वती)

---

(२) ओ३म (१९७)

पं० गणेश प्रसाद जी आनन्दित रहो।

कल एक पत्र भेजा था पाया होगा। उसमें इतना और विशेष जानना कि जो तुम हिसाब का काम रुपये पैसे रखना आदि और करोगे तो २०) मुद्रा मासिक मिलेगा। सो तुम्हारे पिता जी लाला निर्भय राम जी की दूकान से प्रति मास लेलिया करेंगे। हम तुम्हारे शील स्वभाव से प्रसन्न हैं। देशी भाषा की परीक्षा पास कर चुके हो काम ठीक करलोगे।

२१ दिसम्बर ८० (दयानन्द सरस्वती)

---

(१) (१९८)

मास्टर दयाराम जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि आप का पत्र आया हाल मालूम हुआ। आपने जो नक़शा मर्दुम शुमारी का लिखा सो उसकी खाना पुरी इस प्रकार करो।

मजहब फिरके मजहबी—वैदिक

असल कौम—आर्य्य

जात या फिर्का—ब्राह्मण वा क्षत्रिय वैश्य शूद्र

गोत्र या शाख़—जो अपना गोत्र है

और जिसको अपना गोत्र याद न हो वह अपना काश्यप गोत्र या पाराशर लिखा दे। और यह सब समाजों में तथा पंजाब भर में इसी प्रकार से लिख भेजें। और हम यहां सब प्रकार से आनन्द में हैं।

आगरा ३१ दि स० १८८० हस्ताक्षर
दयानन्द सरस्वती

---

(९) (१९९)

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

तुम्हारे लिखने के अनुसार काशी को पत्र हमने भेज दिया है। और जो लिखने की योग्यता थी सो सब लिखदिया। वहां के हिसाब के जो पत्र थे सो जा चुके हैं। और जो मेरठ में लाला रामशरण दास के पास होंगे सो पहुंच जायेंगे। मेरठ को भी पत्र लिख दिआ है।

३५) रुपये माहवारी खरच में ५) भीमसेन और ३०) रुपैये में मुंशी का बंदोबस्त है। अब हम चाहते हैं कि खजांची कोई अच्छा मातबर रहे। थोड़ा भी पढ़ा हो तो चिंता नहीं है। और चिट्ठी लिखने मात्र को कुछ दामों से मुंशी रख दिया जाय, वह चिट्ठी लिख जाया करे।

अथवा तोता राम वहां का काम चलाने योग्य हो तो वह सब हिसाब और कारीगरों से काम लिया करे। भीमसेन खजांची रहे। भीमसेन निष्कपट है, हम अच्छी तरह जानते हैं। और चिट्ठी किसी से लिखवा दिआ करें। नागरी पत्र ये दोनों लिखते ही हैं। अथवा तुम अच्छा विचार कर जो कहो सो

किया जाय। परन्तु तोता राम को अच्छा चिताइ देना चाहिये कि जब तक मुंशी न आवे कुछ और विशेष प्रबंध न हो ले तब तक होशआरी के साथ काम सम्हाले। आगे आप लोग जैसा विचार कर बंदोवस्त करेंगे सो होगा। इस पत्र का जवाब विचार पूर्वक हमारे पास जहां तक हो सके जल्दी भेजना चाहिये।

छापा खाने का प्रबंध अच्छा करना बहुत अवश्य हो रहा है।

(दयानन्द सरस्वती)

---

(९) १ (२००)

लाला काली चरण, राम चरण जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि हमने अब यहां सब असिल कागज और रजिस्टर "बखतावरसिंह" के दस्तखती काशी से मंगा कर देखे, उन में बहुत कुछ फर्क है। और सब लेख धोखे का है। यह भली प्रकार से साबित होता है,। इस लिये तुम को लिखते हैं कि यहां आकर आप भी देखें। और "बखतावर सिंह" को भी बुला लें। और एक रजिष्टरी चिट्ठी बखतावर सिंह के पास भेज दो कि इस चिट्ठी के देखते ही आगरे में स्वामी जी के पास आकर हिसाब समझा दो। और हम भी वहीं होंगे। और ≈) रजिष्टरी में अधिक देवें कि उसके हस्ताक्षर भी आ जावें॥ और आप को यहां अवश्य आना उचित है। और जिस दिन आप आवें उससे पहिले हमको लिख भेजें कि हम फलाने दिन आवेंगे॥

हमने आपको पहिले लिखा था कि १००) पंडितों की बाबत के हमारे पास भेजदो। सो अबतक नहीं पहुंचे। इसका

क्या कारण है। और हमने नारायणदास मुखतार से कहा था कि एक मोतबिर खजानची काशी में रखवादो और उसकी जमानत भी ले लो। इसका भी हाल लिखो॥ सब सभासदों को नमस्ते॥

आगरा बेलन गंज लाला गिरिधर लाल वकील का बागीचा

१० जन० १८८१

हस्ताक्षर
(दयानन्द सरस्वती)

---

(१) (२०१)

द्वारकादास जी आनन्दित रहो!

पत्र तुम्हारा आया हाल मालूम हुआ। पुस्तकों का सूचीपत्र लिखते हैं। जो चाहे दाम भेज कर मंगालो॥

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	...	...	...	५)
सत्यार्थ प्रकाश	...	...	...	२॥)
संस्कार विधि	...	...	...	१॥=)
संध्या	...	...	...	।)
वेदांति ध्वांतनिवारण	...	...	...	=)
सत्य धर्म्म विचार	...	...	...	=)
सत्यासत्य विवेक	...	...	...	।)
वर्णोच्चारण शिक्षा	...	...	...	।)
व्यवहार भानु	...	...	...	।)
संस्कृत वाक्य प्रबोध	...	...	...	।-)
आर्य्योद्देश्य रत्नमाला	...	...	...	-)॥

तथा ऋ० वेद और यजुर्वेद का भाष्य होता है। सो उस

का मूल्य जो अब तक छपा और २६ अंक तक छपेगा २०॥) और आगे को दोनों वेदों का ८) साल है ।

आगरा ३१ दि० १८८०	हस्ताक्षर दयानन्द सरस्वती

---

(७) (२०२)

लाला काली चरण राम चरण जी आनंदित रहो ।

विदित हो कि आपने जो पंडितों के ख़र्चे में १००) की हुँडी भेजी सो पहुँची । आप ख़ातिर जमा रक्खें ॥

हस्ताक्षर

दयानन्द सरस्वती
आगरा १८ जन० १८८१

---

(१) न० १० (उर्दूपत्र) (२०२)

मुंशी नारायण किशन जीव आनन्दित रहो । वाज़े हो कि तुम्हारा खत आया हाल मालूम हुआ । एक चिठ्ठी बख़त नागरी बनाम आत्मा राम आपके पास रवाना की जाती है। सो आप उन को दे दीजिये । और जो अब वे वहां न हों तो जहां वे गए हों पंहुचा दीजिये । और रसीद से मतलअ कीजिये । और लाला मूलराज जीव से कह दीजिये कि मुंशी बखतावरसिंह के सब कागज़ात देखे गए । उन से बखूबी उस का फ़रेब ज़ाहिर हुआ । और जाए ग़ौर है कि सिर्फ कागज़ ही में से उसने १७० का ग़बन किया । और रकम इलावा रहीं। और उस के पास ठाकुर मुकन्दसिंह के भेजे दो खत रवाना कराये कि जल्दी आकर

हिसाब समझा दो। मगर वह नहीं आया। क्योंकि उस ने काम नहीं किया जो रोबरू आने के लायक रहा हो। अब हम ने भी एक खत रजिस्टरी उसके पास [रवाना] किया है कि एक हफ़ता के अन्दर आकर हिसाब समझा दो सो अगर वह आ गया तो तो ठीक है वरना यह मुआमला बज़रिआ अदालत ही तय होगा। इस लिये ला०मूलराज जी को भी लाज़िम है कि ठाकुर मुकन्दसिंह के (को) ज़ाबिता की कारवाई करने के लिये एक खत रवाना कर दें। और जो छिट्ठी आत्मा राम के नाम नत्थी खत हुआ है उस की नकल रखलो और छपवा दो। और वहां लाला शिवदयाल जी पहुँचे या नहीं। और आप के खत से ठाकुर दास के अफआल मालूम हुए।

स्वामी दयानन्द सरस्वती
दयानन्द सरस्वती

आगरा २१ जनवरी सन् १८८१.

(८) न०६२ (२०४)

सेठ कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि अब हमने मुंशी बख़तावरसिंह के समय के सब काग़ज़ात काशी से मंगवा कर देखे और हिसाब की जांच पड़ताल की। और कई योग्य पुरुषों, जैसे बाबू पन्नालाल के गुमाशते जमनादास हिसाबदां, लाला गिरिधर लाल वकील जो यहां इस समय वकीलों में गणनीय हैं, मास्टर लक्ष्मणप्रसाद और लाला हरिप्रसाद आदि को भी दिखाकर जांच पड़ताल कराई। जो भली प्रकार प्रत्यक्ष और सिद्ध हो गया कि बख़तावर

सिंह ने टाइप, काग़ज़ादि प्रेस की वस्तुओं और बाहर की छपाई में से हज़ारों रुपयों का गबन किया । जो भद्र पुरुष उस के कागजात को देखता है दांतों नीचे अँगुली दबा शोक से कहता है कि उसने यह ऐसा बुरा काम क्यों किया । जिस किसी साहब को इसमें सन्देह हो वह उसके कागजात अपनी आंख से देख लेवे । जब हम पर उसकी चोरी सिद्ध हो गई तो हम ने नालिश करने से पहिले चाहा कि उस से हिसाब समझ लेना अवश्य उचित है । इस प्रयोजन से हम ने अलीगढ़ पहुँच कर अपने आम मुख़तार ठाकुर मुकुंदसिंह और भूपालसिंह की मार्फत उसके पास २२ नवम्बर १८८० को रजिष्टरी चिठ्ठी इस विषय की भिजवाई कि तुम आगरे में आकर स्वामी जी को हिसाब समझा दो, कि उसकी रसीद भी हमारे पास मौजूद है। जब वह न आया तब बहुत बाट देखने के पश्चात् हम ने उसके समय के सब रजिस्टरादि काग़ज़ यहां काशी से मंगा कर देखे। और उसको एक रजिस्टरी चिठ्ठी इस विषय की १९ जन० १८८१ को लिखी कि तुम एक सप्ताह के अंदर यहां आकर हिसाब समझा दो नहीं तो कारवाई जाबते की जावेगी। जिस का उत्तर २१ जन० का लिखा २४ जन० को हमारे पास इस मज़मून का आया कि आप मेरे रजिस्टर आदि सब कागजात काशी से मंगवा लें तो मैं २६ जन० को आकर २ दिन में सब हिसाब समझा दूं । उसका उत्तर हम ने २४ जन० को रजिस्टरी कराकर यह लिख भेजा कि हमने तुम्हारे सब काग़ज़ात काशी

से १० जन० ही को मंगा लिये। तुम अवश्य २८ जन० को चले आओ। उसका उत्तर नहीं भेजा। किन्तु गुम शुम लिखता है कि मुझको छुट्टी नहीं मिलती। शिवरात्री वा मई मास की छुट्टी में आकर हिसाब समझा दूंगा। सो वह केवल दिन टला रहा है। उसके आने की आशा नहीं॥ उसके लिखने का कुछ विश्वास और ठीक ठिकाना नहीं है। अब हम ने सब काग़ज़ात ला० गिरिधर लाल वकील को सौंप दिये हैं। फिर हमने उनसे भी एक रजिष्टरी चिठ्ठी उस के पास भिजवाई कि जो अपना कल्याण चाहते हो तो अब भी आकर हिसाब समझादो। उसने उत्तर लिखा कि मैं बहुत चाहता हूं कि स्वामी जी से हिसाब का फ़ैसला हो जावे परन्तु छुट्टी न मिलने से मजबूर हूं। जो आप पंचायत करलें मुझे स्वीकार है। और लाला रामशरणदास मेरठ वाले तथा मुंशी इन्द्रमणि साहब मुरादाबाद वाले मेरे पँच रहे। उसको फिर उत्तर लिखा कि तुम अपने पंचों को आगरे में लाओ वा आगरे में और किसी को पंच बध दो और स्टाम्प के काग़ज़ पर पंचायत का इकरारनामा लिखकर जल्दी भेज दो। अब देखिये कि क्या उत्तर लिखता है। जो वह यहां आ गया और पंचायत करके हिसाब का फैसला कर दिया तो अच्छा है नहीं तो यह मामला अदालत में अवश्य जावेगा। आप फिर हम को कोई दोष न देना, क्योंकि हम ने केवल परमार्थ और स्वदेशोन्नति के कारण अपने समाधि और ब्रह्मानंद को छोड़ कर यह कार्य्य ग्रहण किया है। और निश्च-

लिखित सज्जन पुरुषों ने इस प्रेस के लिये रुपया दिया है कि जिसकी बेबाकी भी अब तक नहीं हुई । जो बख़तावर सिंह ऐसा अनिष्ट काम न करता तो देश की हानि न होती । जो सत्य पूछते हो तो यह वैदिक प्रेस इन्हीं योग्य पुरुषों की सहाय के वसीले से हुआ है कि जिनका विवेचन यह है ॥

आर्य्य समाज फर्रूखाबाद	१८००)
" मेरठ	४९८)
" लाहौर	३५०)
" देहरादून	२५)
" दानापुर	१४)
राजा जयकृष्ण दास जी	६००)
लाला ईश्वर दास स्यालकोट	२५)
लाला चूड़ामणि लुधियाना	५)
चौधरी जालिम सिंह रूपधनी	५०)
पं॰ सुन्दर लाल साहब	३००)

इत्यादि ॥

इन्हीं में से कई मनुष्यों के नाम वसीयतनामा भी है ॥ जो यह केवल हमारा ही धन होता तो कुछ पर्वाह न थी । परंतु यह सब संसार का धन है । फिर भी चोरी से लेना सो यह कैसे पच सकता है । आप भी इसका उत्तर शीघ्र लिख भेजिये। और सेठ निर्भय राम जी से कह देना कि जब हम जयपुर जावेंगे तब आपको अवश्यमेव लिख भेजेंगे । और हम ने डेढ़ तोला सुर्मा पारसल करके भेजा है। उसकी रसीद भेज दीजिये।

हम सब प्रकार से आनन्द में हैं। सब सभासदों को नमस्ते। और हमारा हिसाब भी उनसे भिजवा देना ॥*

{ दयानन्द सरस्वती }

---

(९) नं० ७० (२०५)

लाला काली चरण राम चरण जी आनन्दित रहो। विदित हो कि आपकी चिठ्ठी ९ फ़० १८८१ की लिखी नम्बरी ४०१ आज हमारे पास पहुंची। समाचार विदित हुआ। पंडित सुंदर लालजी प्रयाग वालों ने, ख़ज़ानची होना और ऊपर की दृष्टि से सब यंत्रालय का प्रबन्ध करना स्वीकार कर लिया है। और अनुमान है कि वे प्रेस को भी प्रयाग ही में अपने पास उठा मँगावेंगे। इस लिये अब वहां किसी ख़ज़ानची की आवश्यकता नहीं है। सब प्रबन्ध वे ही स्वत एव कर लेवेंगे। इस बात का निश्चय अब हुआ है। इस लिये ख़ज़ानची के विषय में कुछ उत्तर नहीं लिखा था। और पण्डित प्रागदत्त के लिये भी अभी कुछ नहीं लिख सकते। यदि वे ज्वालादत्त की तरह शीघ्र लिखते होते तो हम उनको अपने पास रख लेते। और उन्होंने जो बाल विवाह खण्डन बनाया सो बहुत उत्तम बात है॥

और जो पं० सुन्दरलाल जी ख़ज़ानची के लिये लिखेंगे तो राधाकृष्ण के लिये लिखा जावेगा। और परसों बख़तावरसिंह के विषय में एक पत्र आपके पास भेजा गया है पहुँचा होगा। वह धूर्त्तता कर रहा है। और अब यह भी सिद्ध हो गया कि

---

* पत्र पर तिथि नहीं दी गई। अगले पत्र के अन्तिम भाग से निश्चय होता है कि यह पत्र ६ फरवरी सन् १८८१ को लिखा गया था।

उसने चोरी से अधिक पुस्तकें छपाकर बेच दीं । अब लाला गिरिधर लाल जी वकील ने उसको नोटिस दिया है । देखिये वह आता है कि नहीं । और सब हाल आपको परसों की चिट्ठी में विस्तार पूर्वक लिख चुके हैं । सब सभासदों को नमस्ते पहुंचे ।

हस्ताक्षर

आगरा
११ फ० १८८१ } दयानन्द सरस्वती {

---

(१०) न० ८४ (२०६)

लाला काली चरण राम चरण जी आनंदित रहो । विदित हो कि कल बखतावर सिंह की एक चिट्ठी आई है जिस में उसने लिखा है कि मैं शिवरात्रि की छुट्टी में २४ फर्व० को चलकर २५ फ० को आपके पास पहुंचूंगा । और दो दिन में सब हिसाब समझा दूंगा । इस लिये आप को लिखते हैं कि आप लाला नारायणदास मुखतार को २५ तारीख तक यहां अवश्य भेजदेवें कि उनके सामने सब हिसाब की सफाई हो जावे । हमने भी बखतावर सिंह के पास एक रजिस्टरी चिट्ठी आज भेजदी है कि तुम अवश्य २५ फ० को यहां पहुंच जाओ । सब सभासदों को नमस्ते ॥

आगरा
१७ फ० १८८१ { हस्ताक्षर
दयानन्द सरस्वती }

---

(१) न० ८८ (२०६)

सेठ निर्भय राम जी आनंदित रहो।

प्रकट हो कि ३ फ० को तुम्हारे पास एक पारसल अंजनकी भेजी थी। सो उसकी रसीद आपने अबतक नहीं भेजी। न जाने पारसल पहुंचा वा नहीं, क्योंकि इतनी देर तो आप कभी न करते थे। जो वह पारसल पहुंच गया हो रसीद भेज दो। नहीं तो वैसा लिखो कि उसकी तला[श] की जावे। और हमने लाला कालीचरण रामचरण को भी परसों एक चिठ्ठी भेजी है। और आज आपक[ो] भी लिखते हैं कि बखतावरसिंह शिवरात्रि की छुट्टी [में] यहां हिसाब समझाने आवेगा। सो आप लाला नार[ा]यण दास मुखतार २४ फर्वरी तक यहां अवश्य भेज दीजिये। हमारी तो यही सम्मति है कि यह मामला घरही में निमट जावे। जो वह आजावेगा तो अच्छो है। नहीं लाचारी से अंत को अदालत में जाना होगा। लाला काली चरण जी ने लिखा था कि आपकी ओर से नालिश न होनी चाहिये। सो हम भी यही चाहते हैं। सो आप लाला गौरी शंकर वकील से सम्मति लीजिये कि नालिश किस की ओर से हो। जो आप ही की ओर से हो तो अच्छा है, क्योंकि वसीयतनामा भी आप के नाम है। और आपका धन भी छापे खाने में लगा है। प्रथम तो पंचायत में निमट जावे तो बहुत ही अच्छा है। दूसरे नहीं तो उस पर हिसाब फहमी की नालिश और जो जब भी न माने तो फोजदारी वा दीवानी में दावा किया जावे॥

और जो तुम इस का प्रबन्ध कुछ न करोगे तो ऐसी लूट मार से हमारे पास के पुस्तकादि भी कोई लूट लेगा । फिर तो हम अपने समीप कुछ न रख सकेंगे । और वेद भाष्य आदि सब काम छोड़ देंगे । केवल एक लंगोटी लगा आनंद में विचरेंगे । अब आप लाला नारायण दास को अवश्य भेज दीजिये कि बख्तावर सिंह २५ फ० को अवश्य आवेगा । * यह पत्र बाबू जी और लाला जगन्नाथ प्रसाद जी [को भी] दिखला दीजिये । इस में विलंब मत कीजियेगा ॥

---

(१०) न० १०९ (२०८)

श्रीयुत लाला मूलराज जी आनन्दित रहो ।

प्रकट हो कि पत्र आप का २८ फ० का लिखा पहुंचा । हाल मालूम हुआ । गोकरुणानिधि पहुंचने से खातिर जमा हुई । इस का अंग्रेजी तर्जमा जल्दी करके हमारे पास रवाना कर दीजिये । हम भी उसको किसी अच्छे विद्वान् अंग्रेजी वाले से सुन लेवेंगे । और जो आपने बावा क्षयानन्द का हाल लिखा सो बहुत अच्छा है । परन्तु जब तक वे आद्योपान्त निरुक्त पढ़ लेवे तब तक अच्छी प्रकार नहीं खुल सकता । और आप जानते हैं कि हमको अवकाश बहुत कम है । और उन को १ घंटे वा २ घंटे

---

*यहां से आगे का लेख स्वयं ऋषि के हाथ का है । पत्र पर हस्ताक्षर नहीं हैं । संशोधन भी ऋषि ने किया है । पत्रस्थ विषय से अनुमान होता है कि यह पत्र १६ फरवरी सन् १८८१ को लिखा गया था ।

अवश्य पढ़ना चाहिये । इसका हमने यह विचार किया है कि जो हम को अवकाश मिला तो हम नहीं तो किसी अच्छे विद्वान् से उसकी सूक्ष्म व्याख्या लिख लेवे तो बहुत अच्छा उपकार होगा । हमको अवकाश होता तो नहीं दीखता । जब कभी अवकाश मिलेगा तब क्षयानन्द हमारे पास आ सकते हैं । अब हम आगरा से ८ वा ९ मार्च को चल कर १० मार्च को जयपुर पहुंचेंगे । जो पत्रादि वा गोकरुणानिधि भेजें तो वहीं भेजिये । और लाला शिवदयाल आज कल कहां हैं । और मुंशी बख़तावर सिंह ने प्रेस में बहुत हानि की है । अब उसके मामले में पंचायत ठहर के इकरार नामा कागज स्टाम्प पर लिखा गया है । हमारे पंच बाबू छेदीलाल गुमाश्ते कमसरियट और उसके पंच लाला आनन्दलाल मंत्री आर्य समाज और सरपंच लाला रामशरणदास रईस मेरठ । और लाला गिरिधर लाल वकील आगरा हमारे वकील ठहरे हैं । और मई मास में यह मामला निमट जावेगा ॥

आगरा	हस्ताक्षर
३ मार्च १८८१	दयानन्द सरस्वती

---

(२) ओ३म् (२०९)

प्रसन्नता पत्र

विदित हो कि मुनशी समर्थदान मंगलदान जी के पुत्र ग्राम नेठवे ताल्लुका रामगढ़ रियास्त सीकर राज जयपुर के रहने वाले हैं । इन्होंने मुंबई में हमारे वेदभाष्य कार्यालय का काम

एक वर्ष तक बड़े प्रेम परिश्रम और चतुराई से किया । इन के काम देखने और ये हमारे पास भी कई दिन तक रहे, इस से हम ने निश्चय किया है कि यह पुरुष धार्मिक, निष्कपटी, सच्चा, उद्योगी, परिश्रमी, चतुर, सभ्य, सुशील, और चालचलन का बहुत ही अच्छा और श्रेष्ठ है। इस लिये हम बहुत प्रसन्न होके लिखते हैं कि जो कोई महाशय इनको उन्नति देंगे तो हम बहुत प्रसन्न होंगे। और हमें पूरी २ आशा है कि इनके आधीन जो कार्य होगा उसको यह अच्छे प्रकार पूर्ण करेंगे। हम ने यह प्रसन्नता पत्र इनको बड़ी प्रसन्नता पूर्वक इस लिये दिया है कि किसी नये स्थान में ये जाय तो अजान लोगों को भी इन के सद्गुण प्रगट हों।

मिती वैशाख शुक्ला ६ हस्ताक्षर
सं० १९३८ । तारीख ४ दयानन्द सरस्वती
मई सन् १८८१ स्थान जयपुर
राजपूताना

(११) (२१०)

लाला कालीचरण जी रामचरण जी आनन्दित रहो । यदुनाथ मिश्र को जो तुम ने ४०) रु० मासिक पर नियत किया है सो ठीक है। परन्तु इस पाठशाला में अधिक करके संस्कृत की उन्नति पर ध्यान रहना चाहिये। और इस में केवल लड़के ही पढ़ते हैं अथवा हमारे रईस लोगों में से भी कोई पढ़ता है । और उस पाठशाला में से कोई विद्यार्थी अच्छे निकले वा नहीं

क्योंकि शाला को एक वर्ष हो चुका है । चौबे तोताराम का हाल लिखा सो जाना । उस का मिज़ाज तेज है सहन शक्ति बहुत कम है । जयपुर में हम डेढ़ मास पर्य्यन्त रहे । वहां अभी राज्य प्रबन्ध में गड़बड़ सा है । और सब सर्दार लोग तो मिले थे परन्तु राजा अभी नहीं मिला । इस लिये कि उनके बाधक लोग बहुत हैं । वहां पर वेदधर्म के प्रकाश की बड़ी आवश्यकता है । सो हमने कुछ २ वहां संस्कार भी डाला है । ईश्वर करे कुछ फल लगे । हिसाब के विषय में जो तुमने लिखा सो यह बख्तावरसिंह का गड़बड़ था । अब प्रयाग में हिसाब ठीक हो रहा है । सो सबको विदित होगा । परन्तु सीधा हिसाब तो आप लोग जानते हैं कि प्रति ग्राहक दोनों वेदों का चार वर्ष का २५॥) चाहिये । इसी हिसाब से देखकर भेज दो । और लाला निर्भय राम के पास भी हिसाब होगा । उनसे भी समझ सकते हो ।

आपको विदित करते हैं कि आर्य्य समाज लाहौर से एक अखबार अंगरेज़ी भाषा में जारी होने वाला है । इस से यह अभिप्राय है कि उसके द्वारा वेदोक्त आर्य्य धर्म्म तथा आर्य्य समाजों की काररवाई राज प्रधान अंगरेज़ लोगों को भी विदित होती रहे । वरन विलायत वालों पर भी प्रगट होता रहेगा । इसके प्रबन्ध में आर्य्य समाज लाहौर और मेरठ की अंतरंग सभा की ठीक २ अनुमति होगई है । इसके नफे नुकसान में सहभागी रहेंगे । मेरी अनुमति है कि आप लोग भी इनमें शामिल होओ क्योंकि इससे आमदनी और तुम्हारे धर्म्म तथा आर्य्य समाजों की कारवाई का ठीक २ वृत्तान्त गवर्नमेण्ट तथा

सम्पूर्ण अंगरेज़ों को विदित भी होता रहेगा जिस्से अनेक अच्छे लाभों की आशा हो सकती है । और अनुमान होता है कि यह पत्र विलायत के बड़े २ ठिकानों में पहुंचेगा। इस से आशा है कि लाभ भी अच्छा होगा। पण्डित गोपालरावहरी ने जो एक मुदर्रिस हमारे पास भेजने को कहा था वह अभी तक नहीं आया। जिसको २५ दिन का अर्सा हो गया। सो उन से कहना कि क्या कारण है जो अभी तक नहीं आया। किमधिकम्। वैशाख शुक्ला १४ संवत् १९३८।*

{ द० स० }

---

(२) ओ३म् (२११)

सेठ निर्भय राम जी आनन्दित रहो।

यह पत्र आप को आवश्यक समझ कर इसलिये लिखा जाता है कि आप इसको उपसभा में सब लोगों को सुना देवें। मुंशी कालीचरण रामचरण जी के पत्र से विदित हुआ कि आप लोगों की पाठशाला में आर्य्यभाषा संस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अर्थात् अंगरेजी व उर्दू फारसी अधिक पढ़ाई जाती है। इससे वह अभीष्ट जिस्के लिये यह शाला खोली गई है सिद्ध होता नहीं दीखता। बरन आप का यह हजारहा मुद्रा का व्यय संस्कृत की ओर से निष्फल होता भासता है। हम ने कभी परीक्षा के काग़जात वा आज तक की पढ़ाई का फल कुछ नहीं देखा। आप लोग देखते हैं कि बहुत

---

* पत्र अजमेर से भेजा हुआ है। पंचांगों में १४ शुक्ला लुप्त है। १२ मई सन् १८८१।

काल से आर्य्यावर्त में संस्कृत विद्या का अभाव हो रहा है। वरन संस्कृतरूपी मातृभाषा की जगह अंगरेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है। अंगरेजी का प्रचार तौ जगह २ सम्राट की ओर से जिन की यह मातृभाषा है भले प्रकार हो रहा है। अब इस्की वृद्धि में हम तुम को इतनी आवश्यकता नहीं दीखती। और न सम्राट के समान कुछ कर सक्ते हैं। हां हमारी अति प्राचीन मातृभाषा संस्कृत जिसका सहायक वर्तमान में कोई नहीं है। और यही व्यवस्था देखकर सम्कृत के प्रचारार्थ आप लोगों ने यह पाठशाला स्थापित की है। तौ यह भी उचित कर्तव्य अवश्य है कि सदैव पूर्व इष्टके सिद्धि पर दृष्टि रक्खी जावै। अब इसके साधनार्थ यह होना चाहिये कि कुल पठन पाठन समय के छः घंटों में ३ घंटे संस्कृत २ घंटे अंगरेज़ी और १ घंटा उर्दू फारसी पढ़ाई जाया करे। और प्रति मास संस्कृत की परीक्षा अन्य पण्डितों के द्वारा हुआ करे। और वे प्रश्नोत्तरों के काग़जात हमारे पास भेजे जाया करें। अभी तक कुछ फल संस्कृत में इस शाला से नहीं लगा। सो इस लिये ऊपर जो कुछ लिखा गया उस्को वर्त्ताव में लाओ तो अपने अभीष्ट के सिद्धि होने की आशा कर सक्ते हैं।" किमधिकं सुज्ञेषु।

आजकल हम ऐसे देश में हैं जहां पर इस ऋतु के श्रेष्ठ फल अर्थात् आम पके तौ दरकिनार कच्चे भी नहीं मिलते। उस ओर इसकी फसल कैसी हुई है। यदि वहां आम फले हों तौ एक बार मुंबई आम अथवा और प्रकार के जो तुम्हारी समझ में अच्छे हों दो सौ तीन सौ रेल द्वारा प्रबन्ध करके भेजदो।

परन्तु वहां से गद्दर आम रवाने करना जिस्से यहां पर ठीक २ आन पहुंचें। यदि डाक गाड़ी में रख दोगे तौ शायद ठीक रहेगा। हमारे पास जयपुर के मुकाम पर चुरू के सेठों के सरपंच का पत्र आया कि आप यहां पधारें। और लिखा है कि सांभर के रेलघर पर रथ बहल और ऊंट इत्यादि सवारी भेज देवें। अभी तो हम ने उन को यही उत्तर लिख दिया है कि एक अच्छी वर्षा होने पर हम अजमेर से कहीं को रवाने हो सकेंगे। क्योंकि उदयपुर मेवाड़ की तर्फ भी कुछ हमारे बुलाने का विचार हो रहा है। यदि उदयपुर को गये तौ वह भी आप लोगों को विदित किया जायगा। शायद इन दोनों स्थानों को जाने में आप से सवारी लेने की आवश्यकता नहीं दीखती। जब जरूरत होगी आपको लिखा जायगा। पत्र का उत्तर देना। किमधिकम्।

ज्येष्ठ कृष्ण ११ सं० १९३८। ता० २३ मई १८८१ ई०।

हस्ताक्षर

दयानन्द सरस्वती

(अजमेर)

(११) ओ३म् (२१२)

लाला मूलराज जी एम. ए. आनंदित रहो।

अर्सा तीन महीने के लग भग व्यतीत हुआ कि हमने आगरे के मुकाम से प्रथम ही गोकरुणानिधि की प्रति आपके

पास इस अभिप्राय से भेज दी है कि इस्का बहुत अच्छा तर्जुमा अंगरेजी भाषा में कर दीजिये। कि वह जल्द छप कर अंगरेज राजपुरुषों वा सामान्यों के अवलोकनार्थ विलायत तक भी भेजी जावें। जिस्से इस बड़े धर्म्म कार्य्य में फल प्राप्ति होवै। परन्तु मालूम नहीं अब तक उस्के तर्जुमे में क्यों विलम्ब हुआ। शायद आप भूल गये वा कार्य्य की बहुतायत से यह ढील हुई। ऐसे कार्य्य में आलस्य वा सुस्ती होना अच्छा नहीं। सो अब शीघ्र उक्त काम को पूर्ण करके भेज दीजिये। जयपुर में हम डेढ़ मास तक रहे। यथ[ा]शक्य अच्छा संस्कार वहां पर हमने डाल दिया है। ईश्वर चाहे वृद्धि होकर सफल होगा। अब ता. ६ मई से हम यहां अजमेर में हैं। सेठ फतेमल जी के बाग की कोठी में ठहरे हैं। प्रति दिन रात को दो घंटे रोज व्याख्यान हो रहा है। हम सब प्रकार यहां आनन्द में हैं। आप अपनी कुशलता के समाचार भी दीजिये। किमधिकम् बहुज्ञेषु। ता० २८ मई सन् १८८१ ई। मिती ज्येष्ठ सुदी १ सं० १९३८।

{ द० स०
(अजमेर) }

---

(१०) कार्ड (११२)

राजा दुर्गा प्रसाद जी आनंदित रहो।

आप के लेखानुसार १०० आम काशी से हमारे पास आगये। हमने तो बम्बे आम फर्रुखाबाद से भेजने को लिखा

था। आपने काशी से भेजने का परिश्रम किया। आम बहुत अच्छे निकले। यहां पर तो आमों का बिलकुल अभाव है। जहा तक बने पाठशाला के उद्देश पर कि संस्कृत की उन्नति होनी सो इसपर अच्छे प्रकार ध्यान रहे। समाज के कार्य्य प्रेम प्रीती और उत्साह के साथ करते कराते रहें। दस दिन अभी हम यहां रहेंगे। पीछे यहां से चलते समय इत्तिला दी जायगी। मुंशी इंद्रमणि के मु. का हाल सुन[ा] होगा।

ता० १० जून। { }

---

(१२) (२१४)

११ नवम्बर सन् ८१ ई०
गढ़ चितोड़ राजमेवाड़

लाला मूलराज जी आनन्दित रहो।

पत्र आपका पहुँचा। समाचार विदित हुआ। परंतु यहां हमारे पास कोई इंगलिश का विद्वान् नहीं है। इस वास्ते यहां भाषान्तर होना असम्भव है। जब आप इतना भी पुरुषार्थ नहीं कर सकते तब आर्य्य समाज की उन्नति किस प्रकार होगी। हम चाहते थे कि किसी प्रकार आप ही इस गोकरुणानिधि पुस्तक को अंग्रेजी में करें तो बहुत ठीक होता और शीघ्र ही हो जाता परंतु अभी तक आप को अवकाश नहीं मिला है। किन्तु देश उन्नति के वास्ते थोड़ा अवकाश निकालना चाहिये। जब आप लोग कुछ नहीं करेंगे तब हम अकेले क्या कर सकेंगे। जो किसी प्रकार आप से तरजमा न हो सके तो हमारे पास

भेज दो। जब हम मुंबई जावेंगे वहां इँगलिश के विद्वान् मिलेंगे तब अंगरेजी में करा लेंगे जैसा बना हो यहां भेज दो। अब हमारा विचार मुंबई में जाने का है क्योंकि वहां के समाज ने १५० रुपैये भी रेल के खर्च के लिये जबर्दस्ती भेज दिये हैं। यहां से जब गवर्नर जरनल साहिब दर्बार करके चले जावेंगे तब हम भी मुंबई की तरफ रवाना होंगे।* जब वहां आने का समय आवेगा तभी आना होगा। क्योंकि काम बड़ा और काम के करने वाले और समय भी थोड़ा। आप लोगों को चाहिये कि जिस २ देश में आप लोग हैं वहां २ का काम सम्भाल लेवें तभी उन्नति का बाग बढ़ेगा।

मि॰ मार्ग॰ व॰ ६ शनि सं॰ १९३८।*

{ दयानन्द सरस्वती }

---

(२१६)

६ दिसम्बर सन् ८१ ई॰

चितोड़ गढ़ राजमेवाड़।

लाला मूलराज जी आनन्दित रहो।

आपका पत्र आया। समाचार विदित हुआ। आप ने जो गोकरुणानिधि पुस्तक को इंगलिश में भाषान्तर कर देना स्वीकार किया उस से बहुत आनन्द हुआ। क्योंकि अंगरेजी भाषा

---

* १२ नवम्बर सन् १८८१। ११ नवम्बर को पत्र लेखक न लिखा। उस दिन समाप्त नहीं किया गया। १२ को श्री स्वामी जी ने अपने हाथ से अन्तिम पंक्तियां लिख कर पत्र समाप्त किया।

होने से अन्य देश वालों को भी लाभ पहुंचेगा । यह तो सच है कि स्वकृत से परकृत निर्बल होता है। तथापि विदेशी भी बहुधा ऐसे हैं कि जैसी इंगलिश भाषा जानते हैं वैसी अन्य भाषा नहीं जानते। और यहां के यूरोपियन अस्वीकार करेंगे तो क्या किन्तु यूरोप देशस्थ जब इस पुस्तक को देखेंगे तो अनुमान है कि उन में से भी कई एक सहायक हों । और आप ने जो स्वजाति विषय में लिखा इस वास्ते अपनी स्वजाति का इतिहास जो परम्परा से चला आता है उसकी थोड़ी सी सूचना लिख भेजें। तब हम अच्छी प्रकार लिख भेजें। और पंजाब में जो हमने थोड़ा सा इतिहास सुना था वह भी विस्मरण हो गया है। इस में विलंब न करना चाहिये । पत्र का उत्तर मुकाम इन्दौर राज हलकर बाबू बाला प्रसाद सपरडंट रेलवे पोलिस के नाम से अथवा मुंबई नल बाजार शबिलदास लल्लु भाई के मकान के पास सेवक लालकृष्णदास नाम से भेजना।*

(दयानन्द सरस्वती)

---

(३) (२१६)

पंडित सुन्दर लालजी आनन्दित रहो !

विदित हो कि पत्र तुम्हारा आया। समाचार विदित हुआ। जो प्रतिमास में २० फारम वेदभाष्य के और १२ फारम वेदांग प्रकाशादि के छपें तो कुछ चिन्ता नहीं । परन्तु इतने से कम

---

* शुक्ल वदी ४ पौष सं० १९३८। पत्र पर उर्दु में स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी ने भी कुछ लिखा हुआ है।

न छपना चाहिये। जो............के मंत्री ने छापाखाना......
.........में होने के विषय में लिखा है यह बिलकुल बेसमझ की बात है। क्योंकि प्रथम तो जगह २ छापेखाने के होने में व्यर्थ हजारों रुपये खर्च होते हैं। और छापेखाने की प्रसिद्धि होने में भी बहुत काल लग जाता है। प्रबन्ध भी बिगड़ जाता है। और भी बहुत प्रकार की हानि हो जाती है। इस से छापाखाना प्रयाग ही में रहेगा।.................में तो इस भाषा के जानने वाले कंपोजीटरों का भी मिलना दुर्लभ है। जो वह हम को लिखेगा तो हम उस को उत्तर दे देंगे। यह उसका लिखना बिलकुल व्यर्थ है।

....

तुम और बाबू विश्वेश्वर सिंह छापेखाने की तरफ दृष्टि रक्खोगे और भीमसेन को चेतन कर दोगे। मिति फाल्गुन वदी ३ सोमवार सम्वत् १९३८ ।❀

(ह० दयानन्द सरस्वती)

(१२) (२१७)

लाला कालीचरण रामचरण जी आनंदित रहो।

विदित हो कि कल रामानन्द के भाई त्रिलोचन ने एक पत्र भेजा है कि जिस में यह समाचार लिखा था। माता, पिता बहुत

❀ ६ फर्वरी सन् १८८१।

बीमार हैं । और मैं भी बीमार हूं । यहां कोई हम को जल देने वाला भी नहीं है। इस कारण तुम श्री स्वामीजी से आज्ञा लेकर देखत पत्र के चले आओ। ऐसा शोक का समाचार लिखा था। इस बात की तुम पत्र के पहुंचते ही तलासी करना कि यह बात सच है किम्वा किसी के बहिकाने से उन्हों ने लिखी अर्थात् केवल भाई के बुलाने के वास्ते। इसका ठीक २ निर्णय करके शीघ्र हमारे पास पत्र भेजो। जो ऐसा ही हो कि जैसा लिखा है तो किसी एक योग्य पुरुष का प्रबंध करके उन के पास रख देना जो उनकी सेवा अच्छे प्रकार कर सके। और जो दवा दारू के खर्च में दो चार रुपये लगें तो दे देना। हिसाब हमारे नाम से लिख लेना। अब इसका पिताभी वहां आगया है। इस कारण ३) रुपैये तो माहवारी इन मिलते ही हैं अब एक रु० अर्थात् ४) रुपैये माहवारी सेठ निर्भयराम जी दुकान दिया करे। किसी प्रकार दुःखी न होने देना जब तक अच्छे न होवें। एक यह गुप्त बात लिखते हैं इस को प्रकट मत करना कि जो किसी का लोकान्तर हो जाय तो जैसा संस्कारविधि में लिखा उसके अनुसार घृत चंदनादि से मृतक संस्कार करवा देना। जो कुछ पंद्रह बीस रुपये लगें लगा देना परन्तु संस्कार अच्छी प्रकार करवा देना। सब से हमारा आशीर्वाद कहियेगा। जो गो-रक्षा के विषय में पत्र वहां भेजे हैं उनको दिखला के अपनी जाति किंवा सब की सही बही में लेना। और सही करने वालों

की ओर से जितनी संख्या हो उतनी लिख के पंच लोग सही उस छपे हुए पत्र पर क[र] देवें।

चैत्र कृष्णा १० रविवार सम्वत् १९३८।*

(दयानन्द सरस्वती)

---

(११) (२१८)

"यह बात बहुत उत्तम है क्योंकि अभी कलकत्ते में इस विषय की सभा हो रही है। इस लिये जहां तक बने वहां शीघ्र संस्कृत और मध्य देश की भाषा के प्रचार के वास्ते, बहुत प्रधान पुरुषों की सही कराके कलकत्ते की सभा में भेज दीजिये और भिजवा दीजिये। और मेरठ और देहरादून से पूर्व २ समाजों में पत्र इस विषय के शीघ्रतर भेज दीजिये"। चै० शु० ५ शुक्र सम्वत् १९३८।†

{ दयानन्द सरस्वती }

(मुंबई)

---

* १९ मार्च १८८२।

† २४ मार्च १८८२। भारतीय स्कूलों में कौनसी भाषा पढ़ाई जावे, इस विषय पर विचारार्थ सन् १८८२ के प्रारम्भ में कलकत्ता में एक कमिशन बैठा था। लाहौर समाज ने उस कमिशन के प्रधान को आर्यभाषा पढ़ाई जाने के लिये पत्र लिखा था। मुलतान समाज ने भी ऐसा ही पत्र वहां भेजा था। उन दिनों मुलतान समाज के मन्त्री उत्साहमूर्ति मास्टर दयाराम थे। उन्होंने

ओ३म्

लाला मूलराज जी प्रमे आनन्दित रहो ॥

आपके दो पत्र आये। उत्तर इसलिये नहीं भेजा कि इस बात का पत्र कोई मसूदा वालों ने हमारे पास नहीं भेजा। अब उनका पत्र आवेगा तो उस बात का जबाब आप को लिखेंगे। और आप जो उस बाबू ...... को रखना चाहते हैं परीक्षा कर ली होगी कि कैसा शील स्वभाव का है। क्योंकि प्रायः ...... लोगों का स्वभाव तेज और कठोर भक्ष्याभक्ष्य में अनाचारी और लोभी भी होते हैं। और राजवाड़ों में इन बातों का बड़ा विरोध है। अब हम इस विषय का पत्र मसूदा को भेजेंगे। जो हमारे पत्र का उत्तर न आया तो आपके पास कुछ उत्तर न भेजेंगे। पश्चात् जब कभी हम मसूदे को जायंगे तब उसका विचार होगा। आप जानते हैं कि रजवाड़ों का लखोटिया ज्ञान है अर्थात् जब तक अग्नि के सामने रहैं तब तक पिघले रहते हैं। तथापि हम पत्र भेज कर खबर मंगवावेंगे। बड़े भारी शोक की बात है कि आपने अब तक गोकरुणानिधि की अंगरेजी नहीं की। हमने निरास होकर यहां मम्बई में और लोगों से अंगरेजी बनवानी पड़ी। अब आप उसमें कुछ मत बनाना। मालूम होता

श्री स्वामीजी को १६ मार्च सन् ८२ को पत्र लिखा कि वे सब समाजों को कलकत्ते को ऐसे पत्र लिखने के लिये प्रेरित करें। श्री स्वामी जी ने उसी पत्र की पीठ पर ऊपर मुद्रित लेख स्वहस्त से लिखकर फर्रुखाबाद भेजा ताकि वहां से सब समाजों में यह आन्दोलन किया जावे।

है कि आपके ऊपर बहुत कुछ बोझ पड़ गया इस कारण ढीले हो गए। आपके पास गोरक्षा और थियोसोफिष्टों के पूर्वापर विरुद्धाचर[ण] करने के विषय का भी पत्र पहुंचा होगा। अब इनसे सम्बन्ध तोड़ दिया है ॥ सबसे हमारा नमस्ते कह दीजियेगा।

मिती वैशाख शुदी ११ शनि सम्वत् १९३९

मम्बई वालकेश्वर

{ द० स० }

(१४) ओम् (२२०)

लाला कालीचरण जी आनन्दित रहो। विदित हो कि पत्र तुम्हा[रा] आया। समाचार मालूम हुए। थियोसोफिष्टों की गोल माल पोलपाल पत्र के छपवाने [में] कुछ चिन्ता नहीं। क्योंकि जो २ उसमें बातें लिखी हैं वे सब सच्ची हैं। अवश्य छपवा दीजिये। जो लाला रामशरणदास ने लिखा है वह ठीक है। छपवाना ही चाहिये। उसमें जो कुछ लिखा गया है वह विचार पूर्वक सच्ची बातें लिखीं है। जो ऐसा न हो तो हम यहां व्याख्यान क्यों देते। और इसको क्यों छपवाते। छपवाने में कुछ हानि नहीं किन्तु लाभ ही है। जो यह बात गोल माल रक्खी जाती तो आर्यावर्त्त में नास्तिक मत फैल जाता। अपने साथ इनने मेल भी इसी प्रयोजन से किया था कि हमारा प्रवेश इस

देश में हो जाय । इतना इनमें अच्छा गुण है कि वेद की बड़ाई और ईसाइयों का खण्डन करते हैं । यह भी जो स्थिर रहै तो । जो यह भी कपट हो तो क्या । जो इनका प्रसिद्धि में व्यवहार हैं वह भीतर का नहीं । इनके सम्बन्ध से जो कोई बुरी बात निकलती तो बहुत धक्का आर्य्यसमाज को पहुंचता । और इन लोगों ने कई एक भोले भाले आर्य्य समाजस्थों को बहका कर अपने सभासद कर लिये । और दश २ रुपये फी लिये । अब इनकी कपटरूपी बातों के प्रसिद्धि होने पर उनकी आंख खुली कि ओहो ये ऐसे निकले अर्थात् विचारों को पश्चात्ताप करना पड़ा । ऐसे ही अन्य लोगों को भी जोकि आर्य्यसमाज में नहीं थे । यही उन लोगों के मुख से बात निकली कि वृथा ही हमारे दश २ रुपये फी देने में गये ॥ सब से हमारा आशीर्वाद कह देना । मई ता० १ सन् १८८२ ई० ।

} द० स० {

(मम्बई वालकेश्वर गोशाला)

(११) ओ३म् (२२१)

राजा दुर्गाप्रसाद जी आनंदित रहो ।

पत्र आप का आया, समाचार विदित हुआ । हम बहुत आनंद में हैं । आशा है कि आप लोग भी आनंद में होंगे । यहां से हमारा विचार ज्येष्ठ शुदी पौर्णमासी के पश्चात् और आषाढ

वदी ३० के पूर्व २ इन्दोर की ओर यात्रा करने का है। क्योंकि महाराजे इन्दोर ने मुझको बुलाने इन्दोर से तार भेजा था। इस समय वे पहाड़ को गए। १५ वा २० दिन में इन्दोर में आजायंगे। तब तक हम भी पहुंचेंगे। वहां से आंव भेजने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि यहां मम्बई में आपुस और पारी संज्ञक आंब बहुत उत्तम होते हैं। जो न होते तो वहां से आना अवश्य होता। यहां डेढ महीने से आंव खाया करते हैं। आज आंवरस भी बहुत सा बना था।

लाला कालीचरण से कह दीजियेगा कि अगले महीने में भा० सु० प्र० का नोटिस वेदभाष्य पर छप जायगा॥

सबसे हमारा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

ज्येष्ठ शुदी ६ मंगल सम्वत् १९३९।❀

{ द० स० } (मम्बई)

---

(१५) ओ३म् (२२२)

लाला कालीचरण जी आनन्दित रहो।

फ़रुखाबाद

विदित हो कि प्रयाग में दयाराम मैंनेज़र हैं। उसने अकेले से काम बहुत होने के कारण से ठीक नहीं चल सकता। इस लिए पं० सुन्दरलाल जी लिखते हैं कि द० रा० के पास एक

❀ २३ मई सन् १८८२।

सहायक और रखना चाहिये। इस लिये आपको लिखते हैं कि एक प्रामाणिक पुरुष तीन भाषा जानने वाला कि जिसका आप को बड़ा विश्वास हो वहां भेजें। ऐसा पुरुष तलाश करके आप हमको और पं० सुन्दरलाल जी को भी इस विषय [में] लिखें। उसका मासिक १५) रु० वा २०) रु० वा जितना आप योग्य समझें करें। परन्तु काम बहुत ठीक होना चाहिए। पंडित सुन्दरलाल जी अन्डमान एक मास तक ब्रह्मा के मुल्क को जाने वाले हैं। इसलिए उनके सामने ही उस पुरुष का वहां पहुंच जाना चाहिये। वह पुरुष सदैव के लिये वहां रहना चाहिए। यह नहीं कि थोड़े दिन के लिये रहे। आपका समाज प्रयाग से निकट है। इसलिये आप लोगों में से कोइ २ म[ा स द]ो मास से प्रयाग जाकर देख आया करें तो ठीक प्रबन्ध रहे। परन्तु वहां जाना पं० सुन्दरलाल जी न हो तब जाना चाहिये। और जब हों तब कुच्छ जरूरत नहीं। सब से हमारा आशीर्वाद कहना। पत्र का उत्तर शीघ्र देना चाहिये।

हस्ताक्षर

ता० ९ जून
स० १८८२।❀

दयानन्द सरस्वती
मम्बई बालकेश्वर

❀ पत्र के नीचे कुछ पंक्तियां समर्थदानजी ने अपनी ओर से लिख दी हैं

(१६) ओ३म् (२२३)

लाला कालीचरण जी मंत्र[ि] व रईस आनन्दित रहो।

विदित हो कि एक पत्र को पहले दिया था। उसमें प्रयाग में छापेखाने में मैनेजर रखने के लिए आप को लिखा था। परन्तु पीछे से यह नि[श्च]य ठहरा कि वहां समर्थदान को भेजना चाहिये। समर्थदान यहां हैं। सो यहां से प्रयाग को चले जांयगे। ये प्रयाग को मास डेढ मास तक जा[वेंगे]। इनका यह काम किया हुआ है। इनको इस काम में तजरबा हो चुका है। ये काम अच्छा चलावेंगे। इस लिये इनसे पक्काई करली है। सो अ[ब] आप मैनेजर के तलाश करने में परिश्रम न करें। जो इन से पक्काई न होती तो आपको परिश्रम करना पड़ता।

आर्य्यदर्पण में जो जगन्नाथदास ने लिखा है उसका उत्तर आप बहुत उत्तम रीति से लिखे। कुछ दबना मत। खूब टुकड़े टुकड़े उड़ादो। ऐसा न हो[गा] तो वे लोग बंध न होंगे। वह लेख केवल जगन्नाथदास का ही नहीं है। उसमें इन्द्रमणी को भी शामिल समझना चाहिये। [मु]सलमानों के मुकद्दमे में सहायार्थ रुपया आया था उसमें इन्द्रमणि ने क्या २ लीला की। सो तो आपको [वि]दित ही है। फिर ऐसे का क्या लिहाज़ रखना। बराबर लिखना चाहिये।

हस्ताक्षर

ता० १४ जून १८८२। दयानन्द सरस्वती मुंबई

(१७) ओ[३म्] (२२४)

लाला कालीचरण जी आनन्दित रहो।

लेखनीय यह है कि लाला रामचरण जी के पुत्र के देहान्त होने का हमको समाचार मिला। सो यह गृहस्थ लोगों को वास्तव में शोक का कारण है। परन्तु आप लो[ग] बुद्धिमान् हैं सो धैर्य्यावलम्बन करें। क्योंकि विद्या ऐसे शोक के समय में धैर्य्यावलम्बन कराने वाली है। सुख में तो मूर्ख और विद्वान् स[भी] आनन्दित रहा करते हैं। परन्तु दुख में तो विद्वान् ही धैर्य्यावलम्बन करके शोकाकुल नहीं होते। विद्या का फल सच पूछो तो यही है। अब आप लोग सब घरके धीरजता धारण करके शोक निवृत्ति करें। क्योंकि शोकाकुल रहने से अनेक प्रकार की हानियें होती हैं।

जगन्नाथदास की प्रश्नोत्तरी का खण्डन बहुत दिन हुए हम आपके पास भेज चुके हैं। उसके भेजे पीछे भा० सु० प्र० के दो अंक निकल चुके हैं। परन्तु आपने उसको छापा नहीं। अब आप उसको शीघ्र छाप दें। क्योंकि ऐसे काम में ढील करने से बड़ी हानि होती है। क्योंकि पाखण्डियों को तो होसला होता जाता है और आर्य्य लोगों के चित्तों में भ्रम का संचार होने लगता है। इसलिये आप अब इसके छापने में ढील न करें।

आपको विदित ही है कि देखो इन्द्रमणि ने उपकार का

कैसा प्रत्युपकार किया है। अब देखो तो ऐसे २ नामांकित पुरुषों की ही यह दशा है तो अन्य साधारण की क्या कथा है।

हस्ताक्षर

ता० १६ जून } दयानन्दसरस्वती }
स० १८८२ } मुंबई }

(१८) (२२५)

लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि हम सुख पूर्वक मम्बई से खंडुआ में आगये हैं। यहां रा० रा० भाऊ दादा जी के बागीचे में ठहरे हैं। हमने दश महीने का पंडितों के जमा खर्च का हिसाब लाला मोहन लाल को दे दिया है। और २००) रुपये उनसे पंडितों के मध्ये लिये हैं। १४) रुपये पिछले बाकी रहे थे। सब मिलके २१४) रुपये हुए। उनमें से १६०) रुपये पंडितों के मध्ये खर्च हुए। शेष ५४) रुपये रहे। सो वहां लाला निर्भयराम जी के पास जमा खर्च करा देना। अनुमान है कि वह कागज भी आपके पास पहुंच गया होगा। आर्य्य प्रश्नोत्तरी का शांति के साथ इस महीने में छाप के प्रसिद्ध कर देना। उस के साथ आर्य्यदर्पण का उत्तर भी छपा देना॥ सब से आशीर्वाद कह देना॥ शुभमिति।

ता० २५ जून सन् १८८२ ई०

} दयानन्दसरस्वती { (खंडुआ)

(१६) (२२६)

लाला कालीचरण रामचरण जी आनंदित रहो।

विदित हो कि लाला जगन्नाथदास मुरादाबाद की प्रश्नोत्तरी के विषय में विस्तार से लिख के ७ पृष्ठ भेजते हैं। पहुंचेंगे। जिस समय पहुंचे उसी समय १००० प्रति छपवा देना। परन्तु छपवाने में विलम्ब किंचित्मात्र भी न करना। पश्चात् तुम अपने समाचार में छपवाना। छपवाने में इतना ध्यान रखना कि जैसा लेख है वैसा ही छपवाना कम वा अधिक न करना। और इसका मूल्य)॥ आना रखना। परन्तु बाहर के मंगवाने वालों से डाकव्यय भी ले लेना। इसको शीघ्र ही छपवाके सर्वत्र प्रसिद्ध करदो। जिससे लोगों की शंका दूर हो जाय और उनकी बुद्धि का भी प्रकाश हो जाय कि ये गुरु और चेला किस प्रकार के हैं। और इन्होंने क्या २ विचित्र वर्त्तमान किया है। आजकल आत्मानन्द सरस्वती स्वामी जी हमारे पास हैं॥ इति

ता० १२ जुलाई सन् १८८२ ई०।

[दयानन्द सरस्वती] मालवा नवाव का जावरा)

---

(२०) (ओ३म्) (२२७)

लाला कालीचरण रामचरण जी आनंदित रहो।

विदित हो कि प्रथम तो तुम लिखते थे कि शीघ्र (आर्यों प्रश्नोत्तरी) के विस्तारपूर्वक प्रत्युत्तर लिखके भेज दीजिये। जब भेज दिये तो अब कहते हो कि कानून बनकर आवे तो छापें। छपाने में विलम्ब करना अच्छा नहीं। जो उसमें कोई

शब्द निकालने योग्य हो निकाल दीजिये । परन्तु जो २ उनके अभिप्राय के शब्द हैं उनमें कुछ न्यूनाधिक न करना ॥

कल हम (मालवा नवाब के जावरा से चितोड़गढ़ में आ पहुंचें । यहां के हाकिम ठाकर जगन्नाथ जीने हमारे लिये यथा-योग्य प्रबंध किया है । अब दो एक दिन में उदयपुर जायंगे । अनुमान है कि चातुर्मास वहीं होगा ॥

ता० २६ जुलाई सन् १८८२ ई० ।

] दयानन्दसरस्वती [(चितोड़गढ़ मेवाड़)

---

(१२) (ओ३म्) (२२८)

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनंदित रहो ।

विदित हो कि हम मुम्बई से चलकर ठहरते ठहराते अब उदयपुर में पहुंच कर नौलखा बाग के राजमहल में निवास किया है । एक दिन श्रीयुत आर्य्यकुलदिवाकर श्री महाराणा जी पधारे थे । अच्छे विषयों में वार्त्तालाप हुआ । और राजपुरुष प्रतिदिन आया जाया करते हैं । यथायोग्य प्रश्नोत्तर भी होते हैं । जो आगे विशेष वर्त्तमान लिखने योग्य होगा विदित करेंगे । आशा है कि आप अपना कुशल क्षेम का भी समाचार लिखेंगे । बड़े आश्चर्य का विषय है कि पुकारते तो हैं हमारी उन्नति हो, परन्तु उन्नतिकारक विषय जब आ पड़ता है तब ऐसे निरुत्साही और भयातुर होकर चुपचाप बैठ रहते हैं । क्या ऐसी ही बातों से उन्नति होने की आशा करते हैं । देखिये लाला कालीचरण

जी ने प्रथम चिट्ठी पर चिट्ठी भेजीं और बड़ी शीघ्रता के साथ लिखा कि (मुरादाबाद वाले जगन्नाथ निर्मित प्रश्नोत्तरी के) विस्तापूर्वक उत्तर प्रमाणों के साथ भेजिये। जब हमने वेदभाष्य के काम को छोड़ प्रमाण सहित उत्तर लिख रजष्टरी कराके भेज दिये और उसके साथ एक पत्र भी भेजा कि शीघ्र छपवा कर प्रसिद्ध कर देओ। उस शीघ्रता का फल यह हुआ कि अब दो महीने व्यतीत हुए एक अक्षर भी नहीं छपवाया। लिखा कि प्रेश एकट होने वाला है। उसको देखे पश्चात् छपवावेंगे। यह इनको केवल किसी के बहकाने से भ्रम मात्र हुआ है। क्योंकि जो ऐसा होता तो भारतमित्रादि पत्रों में अवश्य छपता। अथवा अन्य मनुष्यों के द्वारा भी सुनने में आता। सो केवल प्रेश एकट के भ्रम होने से डर गये हैं। भला ऐसे २ सद्यः कर्त्तव्य कर्मों के करने में भ्रम मात्र से डरकर निरुत्साही हो जाना अवनति का कारण नहीं तो क्या है। इसलिये............❀

कार्ड

(२१) ओ३म (२२९)

लाला कालीचरणदास जी आनंदित रहो।

विदित हो कि तुम आर्य्य समाज के पत्र में नाटक का विषय मत छापो। यह अनुचित बात है। यह आर्य्यसमाज है। भडुआ

❀ यहां से लेकर अन्त तक का पत्र भाग ३, पत्र संख्या १७३ में छप चुका है।

समाज नहीं। जो तुम नाटक का विषय छापते हैं ऐसा करना भडुआपन की बात है। इसलिए ऐसा वर्त्तना उचित नहीं।

ता० १६ अकटूबर।† [द० स०]

---

(१३) (२३०)

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि बहुत दिनों से अवकाश नहीं होन के कारण पत्र नहीं लिखा। अब कुछ प्रसंग से लिखते हैं। यहां का वर्त्तमान बहुत अच्छा है। जो लिखने लगें तो एक पुस्तक बन जावे। सो पीछे सूक्ष्मता से आप को विदित कर देंगे। परन्तु यही समझ लेना कि समाचार बहुत ही अच्छा है। जब आप सुनेंगे प्रसन्न तो अवश्य हो जावेंगे। और हर साल आप शीत काल में घूमने को जाते थे। यदि आप की इच्छा हो तो यहां हम कम से कम १५ दिन रहेंगे। आप आवें तो यहां का वर्त्तमान भी सब विदित हो जावेगा। और श्री महा[रा]णा जी तथा अन्य राजपुरुषों से भी आप का मेल मिलाप हो जावेगा। सो यदि आप आवें तो १५ दिन के भीतर ही विचार करना चाहिये। सो जो आप के आने का पत्र यहां आवेगा, तब चितौड़ गढ़ रेल से यहां तक आने के लिये सवारी का प्रबन्ध भी हम कर देंगे। और लाला कालीचरण जी से कह दीजिये कि उनका पत्र हमारे पास आया। हमारा अभिप्राय यह नहीं था कि ६००) वा ३००) तुम को देने पड़ेंगे। किन्तु लिखने वाले

---

† लिफाफे की मुहर पर उदयपुर से पत्र का चलना लिखा है।

की भूल है। हमारा अभिप्राय यह है कि २००) रु० कम से कम देना चाहिए कि जिससे ३ फार्म का नवीन टाईप मंगा लिया जा[वे]। और ६००) रुपये के विषय में यह अभिप्राय है कि जो समाजों के समाचार-पत्रादि सब पुस्तक छपने लगेंगे, तो दूसरा प्रेस मंगाने के लिए जिन २ के पुस्तक छपेंगे सबसे रु० लिये जायेंगे। और निकाल भी दिए जायेंगे। अब भारतसुदशा-प्रवर्तक पं० लक्ष्मीदत्त जी से लिखाना चाहिए। वे संस्कृत-युक्त अच्छा विषय लिखेंगे। और नाटक* का विषय तो नाम मात्र भी नहीं आना चाहिये। जो अच्छा विषय भी लिखना हो वह प्रश्नोत्तर वा अन्य प्रकार से लिखा जावे। नाटक तमाशे का है। क्योंकि तुम्हारे नाटक को देख के लखनऊ के समाज में नाटक का व्याख्यान ही होने लगा। जब हमने मने किया तो कहने लगे कि अपने फरुखाबाद समाज [के] पत्र में नाटक क्यों छपता है। यह नाटक से बिगाड़ का उदाहरण है। और पाठशाला में संस्कृत पढ़ के कितने विद्यार्थी समर्थ हुए। अथवा अंगरेजी फारसी में ही व्यर्थ धन जाता है। सो लिखो। जो व्यर्थ ही हो तो क्यों पाठशाला रक्खी जाय। सब से हमारा आशीर्वाद कह देना।

मि० मार्ग वदी० १४ शनिवार सं० १९३९।

---

* यहां से लेकर पत्र के अन्त तक का भाग तीसरे भाग के पत्र संख्या १७४ में छप चुका है। पहले हमें उतना ही अंश बंगाली बाबू के पत्रों में से श्रीमान् पं० घासीराम जी द्वारा प्राप्त हुआ था।

यह रुक्का सेठ निर्भयराम जी को देके १२) रु० मंगवा कर हर्जु कहार के लड़के रामदीन को दिला देना। और वहां के मुनीम से कहना कि रु० देने में देर न करे।*

{दयानन्द सरस्वती}

(१७) ओ३म् (२३१)

बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि इस पत्र के भेजने का मुख्य प्रयोजन यही है कि जो यात्रा करने का प्रथम विचार किया था कि १५ दिन के पश्चात् यहां से अन्यत्र की यात्रा करेंगे उस में श्रीयुत आर्य्य कुल दिवाकर उदयपुराधीशों के अत्याग्रह से अब माघ शुक्ल १५ पर्य्यन्त रहना होगा। छः शास्त्रों का विषय तो पढ़ा दिया है। अब मुख्य जो राजनीति का विषय है उस के लिये मनुस्मृति के ७वें अध्याय से ९वें तक पढ़ावेंगे। यदि अब आप आना चाहें तो हमको पत्र लिखो। जब हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुँच जावे कि अब चलो सवारी भेज दी है तब वहां से चलना चाहिए। और यदि अब न आया चाहो तो जब रेल पर पहुंचेंगे तब आप को खबर देंगे। उस समय मिलना हो जायगा। पंडित लक्ष्मी

---

* यह सारा ही पत्र ऋषि दयानन्द सरस्वती जी महराज की अपनी लेखनी का लिखा हुआ है। ६ दिसम्बर सन १८८१।

दत्त आदि समासदों से हमारा आशीर्वाद कहियेगा ॥ शुभम्
पौषवदी १४ सं० १९३९ ।*

{ दयानन्द सरस्वती }

---

(६) ओ३म् (२३२)

श्रीयुत चौधरी जालमसिंह जी आनंदित रहो।

विदित हो कि हम उदयपुर से फाल्गुन वदि ७ सप्तमी के दिन चितौड़ में आन पहुंचे। और अब यहां से फाल्गुन वदि त्रयोदशी के दिन शाम की रेल में बैठकर चतुर्दशी के दिन शाहपुरा राज मेवाड़ ज़िला अजमेर को जोकि बड़ी रूपाहेली से ८ कोश है जांयगे। और जो कागज़ दो तो इसी पते से देना। आगे हाल यह कि एक स्वीकार पत्र राज उदयपुर में मुद्राङ्कित स्वीकृत हुआ। और उसके अधिपति श्रीमान् दिवाकर हुए हैं। बाकी सब सभासद जब छपेगा विदित होगा। और एक मान्यपत्र भी दिया है। और छः शास्त्रों का मुख्य२ विषय और मनुस्मृति का राजधर्म्म तथा विदुर प्रजागरादि के श्लोक कुछ व्याकरण और अन्वय की रीति भी श्रीमानों ने मुझ से पढ़ी। और रु० १२००) कल्दार और एक दुशाला वेदभाष्य के सहायार्थ और एक साधारण दुशाला और रु० २००) कल्दार रामानन्द ब्रह्मचारी को और ५००) रु० कल्दार फीरोजपुर के अनाथाश्रम के

---

*८ जनवरी सन् १८८३ सोम।

लिये और रु० २००) कल्दार उसी में कसीदा करने वाली लड़-कियों को पारितोषिक प्रदान किया।

मिती फाल्गुनबदि १२ सम्वत् १९३९।

तदनुसार तारीख ६ मार्च सन् १८८३ ई०

(हस्ताक्षर)

{ दयानन्द सरस्वती }

---

(२२) ओ३म् (२३३)

श्रीयुत लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

पत्र तुम्हारा महादेव पंडित के पत्र के साथ आया। समाचार विदित हुआ। समाज का उत्सव अच्छी प्रकार हो गया यह बहुत सौभाग्य की बात हुई। जो महादेव पंडित के विषय में जो तुमने कुछ अनुमान किया सो हमको नहीं दीखता। यह पंडित धनार्थी है धर्मार्थी नहीं। क्योंकि इसका पत्र इस बात की प्रसिद्धि करता है। जैसा कि कान्हपुर में एक पंडित को रक्खा था और पश्चात् खराब निकला। इन लोगों का विश्वास हमारे हृदय में तभी होगा कि जब उनका वर्तमान प्रत्यक्ष वा परोक्ष में एक सा देखा जाय। इस पत्र के साथ मान्यपत्र की नकल भेजते हैं। मेरठ से आया हुआ मुंशी इन्द्रमणि का हिसाब इस लिये नहीं भेजते कि तुम को प्रेस एक्टर के मिथ्या भ्रम ने भ्रान्त कर रक्खा है। अथवा मुंशी इंद्रमणि से किसी प्रकार का सम्बन्ध होगा। अस्तु

जो हो। तुम्हारा प्रबंध भी पाठशाला विषयक अच्छा नहीं है। अब कई बार हमने लिखा कि पंडित लक्ष्मीदत्तजी के आने के पश्चात् वा पहले संस्कृत में कौन २ ग्रंथ को किस २ ने वा कितनों ने पढ़ा वा पढ़ते हैं उसका समाचार कुछ भी नहीं लिखा। इस से विदित होता है कि तुम्हारी पाठशाला में अलिफ़,बे और कैट बैट का धर्मार है जो कि आर्य्य समाजों को विशेष कर्तव्य नहीं है। और इसके साथ पंडितों का हिसाब भेजते हैं देखलो। तुम अपने हिसाब से मिलालो और आगे रु० शाहपुरा राज मेवाड़ के पते से मेरे पास भेजदो। और सब से बाबूजी आदि से हमारा आशीर्वाद कह देना।

मि० वै० ब० ३ सं० १९४० ।*

†(हस्ताक्षर)

{ }

---

(२३) ओ३म् । (२३४)

श्रीयुत कालीचरण रामचरण जी आनंदित रहो।

पत्र तुम्हारा २-५-८३ का लिखा हमारे पास सहित ३००) की हुंडी के आया। मैं भी जानता हूं वैदिक यन्त्रालय का हिसाब

---

*२५ एप्रिल, बुध सन् १८८३।

† इस पत्र पर ऋषि के हस्ताक्षर नहीं है। सारा पत्र लेखकके ही हाथ का है। ऋषि का एक भी अक्षर नहीं है। इस लेखक के लिखे और भी कई पत्र हैं।

गड़बड़ है। परन्तु अब पंडित सुन्दरलाल जी का आदमी गया है। वह हिसाब किताब लिखा करेगा। इससे आशा है कि सुधर जायगा। यदि न सुधरेगा तो जैसी आप लोगों की सम्मति–यही कि एक सराफी पढ़ा हुआ अच्छा प्रामाणिक आदमी आप लोगों की सम्मति से लिया जायगा। इस के लिये आज मैंने पण्डित सुन्दरलाल जी को लिखा है। उनकी सम्मति आने पर मैं लिखूं-गा। अथवा परद्वारा पंडित सुन्दरलालजी तुम को लिखेंगे। लाला सेवाराम जी तथा बाबूजी आदि को मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा। और एक यह फोटोग्राफ तथा छोटा सा पत्र रामानन्द को दे दीजियेगा। और पाठशाला के कक्षा विषय में अवकाश पाकर लिखूंगा और यहां का समाचार भी।

शाहपुरा

मि० वै० शु० ४ सं० १९४०।*

{ दयानन्द सरस्वती }

---

(१) ओ३म्। (२३९)

रामानन्द आनन्दित रहो।

तेरे लिखे प्रमाणे प्रतिकृति भेजी जाती है। कोई कहार अच्छा मिले तो लेते आना। तेरे ३०) रु० के लिये १०)१५)२०)

---

*१० मई बृहस्पति सन् १८८३।

तक देंगे १०) जमा रहेंगे। दुकान को लिख दिया। जब आवश्यक होगा तब दे देंगे। सब से हमारा आशीर्वाद कह देना।

मि० वै० शु० ४ सं० १८८३

(हस्ताक्षर)

{ दयानन्द सरस्वती } शाहपुरा

---

(१) कार्ड। (२३६)

ओ३म् ।

ठाकुर शेरसिंह जी आनन्दित रहो।

कार्ड तुम्हारा आया समाचार विदित हुआ। आजकल गर्मी बहुत होती है तुमको यात्रा में कष्ट उठाना पड़ेगा। यदि ऐसी ही इच्छा हो तो रात्रि २ में रेल में बैठ दिन में ठहर२ के अजमेर पहुंच रूपाहेली के स्टेशन उतर के हमारे पास चले आओ। रूपाहेली से शाहपुरा ८ कोश है। यदि तुम तीन दिन पहले हमारे पास पत्र वा तार भेजदोगे तो सवारी तुम्हारे वास्ते यहां से आ जायगी जिससे तुम सुख पूर्वक यहां पहुंच जाओगे। परन्तु थोड़े दिन के लिये हमारे पास न आना चाहिये। कम से कम २० तथा ३० दिन तक जरूर रहना चाहिये। ठाकुर गोपाल सिंह जी आदि को मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा। परमात्मा

की कृपा से हम आनन्द में हैं। आशा है कि तुम भी आनन्द में होगे। वै० शु० ७ सं० १६४० रविवार।*

{ दयानन्द सरस्वती }

---

(२४) ॥ ओ३म् ॥ (२३७)

मंत्री आर्य्यसमाज फरुक्काबाद लाला रामचरण कालीचरण जी आनंदित रहो॥

विदित हो कि रामानन्द ब्रह्मचारी की माता मुहल्ला नुनिहाई साह विहारी लाल जी की हवेली के पीछवाड़े जो कि लाला बलदेवदास ने मकान मोल लेकर इसके पिता शंकरानन्द जी को धर्मार्थ दिया उस में रहती है। यदि जब कभी उस का शरीर छूट जाय तो उसके अन्त्येष्टि कर्म के यिये (५०) पचाश रुपये लाला निर्भयराम जी की कोठी से लेलेना और हमारे हिसाब में लिखा देना। और उन रुपयों से घृत और सुगंध्यादि पदार्थों को लेकर जैसा विधान षोडश संस्कारविधि के पुस्तक में लिखा है उसके अनुसार मृतककर्म करा देना। और इस काम के कराने में किसी प्रकार आलस्य न करना। और इस बात

---

*निम्नलिखित पता ऋषि के हाथ का लिखा हुआ है। रामानन्द ब्रह्मचारी के हस्ते लाला कालीचरण रामचरण मंत्री आर्य्य समाज फर्खाबाद की मार्फत पहुंचे। (फर्खाबाद)

को प्रत्येक सभासद् को विदित कर देना जिस से समय पर सहायक होवें ॥ ॥

ज्येष्ठ शुक्ल ९ बृहस्पति संवत् १९४० ।

राज मारवाड़ योधपुर ॥ { दयानन्द सरस्वती }

निम्नलेखानुसार मृतकसंस्कार करने के लिये घृतादि पदार्थ लिये जावेंगे ॥

२५) पच्चीस रुपये का अच्छा घृत ॥

१०) दश रुपये का सफेद सुगंधि वाला चंदन ॥

५) अगर तगर और कपूर आदि सुगधित वस्तु ॥

५) वस्त्रादि लिये जावेंगे ।

५, और पांच रुपये की पलास अर्थात् ढाख की लकड़ी अथवा आंब की, और संस्कारविधि के लेखानुसार वेदी बनानी होगी ॥

उक्त लेखानुसार ५०) रुपये केवल दाहकर्म में खर्च होने चाहियें ॥

---

(१५) कार्ड (२३८)

ओ३म्

जोधपुर

श्रावण वदी १० रवि
सं० १९४०

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनन्दित रहो । आपने १२५ आम भेजे सो पहुंचे । उनमें से ८०) आम अच्छा रहे और बाकी

बिगड़ गये। परन्तु आम बहुत अच्छे थे। और उदयपुर और साहपुरे की रसीद के लिये लिख भेजेंगे पहुंच जांयगी। आप अपने २००) रुपये लेके बाकी रुपये लाला निर्भैराम की दूकान पर जमा करा दीजिये। क्योंकि आज कल वैदिक यंत्रालय की दशा जबसे समर्थदान आया है तब से अच्छी है। और पंडित सुंदर लाल प्रबंध भी अच्छा करते हैं। यहां का समाचार अच्छा है पश्चात् लिखेंगे।

लाला कालीचरण जी के पास मिष्टर ए० ओ ह्यूम साहब के प्रश्नोत्तर का पत्र छापने के लिये भेजा है पहुंचा होगा

सब से हमारा आशीर्वाद कह देना।

{ दयानन्द सरस्वती }

---

(१६) ॥ ओ३म् ॥ (२३९)

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी आनंदित रहो। विदित हो कि आपको मैंने बहुत बार कहार के लिये लिखा था तुमने कुछ ध्यान नहीं दिया। उसका फल यह हुआ कि एक जाट जिले भरतपुर से दो कोश पूर्व की ओर ग्राम विरोना साहबराम फोजदार का बेटा और कुंदन का छोटा भाई कल्लू नाम वाला शाहपुरे में पेसे ही रखलिया था। वह चोरी कर के भाग गया है। यदि भरतपुर मे आप का विशेष संबंध हो तो उसके द्वारा उस चोर का निश्चय करवायिये। और फिर भी लिखते हैं कि कोई कहार तलाश कर के भेजोगे तो अच्छा होगा।

१—आवश्यक बात जिस पर आपको अवश्य ध्यान देना है सो यह कि जो कुछ नगद रुपये मेरे पास वा वैदिक यंत्रालय में वर्तमान खर्च से अधिक रहे वह आप लोग निम्न-लिखित क्रः महाशयों की सभा के प्रबन्ध में रहें। और जब २ उसमें से खर्च करने की आवश्यक होवे तब २ मैं वा वैदिक यन्त्रालय के लिये वहीं से खर्च के लिये जाया करे। और इस धन को ॥) सैकड़े व्याज पर जहां कि आप लोगों की सभा की और मेरी संमति हो वहीं रक्खा जावे। यदि आप लोग निम्नलिखित सब सभासद उचित समझें तो सेठ निर्भैराम जी के दुकान में जमा रहे और वे ॥) आना सैकड़े व्याज भी देते हैं परन्तु इस की संभाल सभा की ओर से एक मंत्री और एक प्रधान होवे। और सभा उस धन की रक्षा और उन्नति में सदा ध्यान रक्खे। क्योंकि मैं अपने पास शिवाय एक महीना भर के खर्च के अधिक नहीं रखना चाहता। जो अधिक हो वह सभा की संमति से लाला निर्भयराम जी के यहां जमा हुवा करे और खरच भी वहां ही से उठा करे। जब तक मेरा शरीर है तब तक तो कुछ चिंता नहीं परन्तु पश्चात आप लोगों को अर्थात् सभा को परमार्थ के लिये बड़ा पुरुषार्थ करना होगा। कि जिस से आर्यावर्त की उन्नति में ये सब पदार्थ लगा करें। और मेरे पश्चात् जो स्वीकारपत्र में प्रधान और सभासद हैं वे सब इस सभा के सभासद गिने जायंगे। और उसी स्वीकार पत्र के नियम के अनुसार व्यय भी किया जायगा।

॥ सभा का नाम ॥

आर्यहितैषिणी—

इस के सभासद

१—एक आप

२—दूसरा लाला जगन्नाथप्रसाद

३—लाला निर्भयराम

४—लाला कालीचरण

५—राव बहादुर पंडित सुंदरलाल

६—बाबू आनंदी लाल मंत्री आर्यसमाज मेरठ।

७—सातवां मैं

इस सभा का दूसरा काम यह भी रहे कि छटे २ महीने कोई प्रतिष्ठित सभासद वा कोई योग्य पुरुष सभा की सम्मति से भेजा जावे। वह वैदिक यंत्राल के धन पुस्तक आदि की जांच पड़ताल करे। उसका सब हिसाब छोटे पुस्तकाकार में छपवा के स्वीकार पत्र के सभापति आदि और मुख्य २ समाज के पास भेज दिया जावे। और मध्य में भी वैदिक यंत्रालय की सभा से जो कि सात पुरुषों की वहां नियत हुई है पत्र द्वारा भी पूछ सके। इस के विना देखिये अभी च० ४००—५०० रुपयों की हानि हुई है। और कुछ इधर उधर से ११५) और ३००) मैंने अपने हाथ से लाला रामसरन दास मेरठ में जमा किये थे वे गड़बड़ में रहे। इसी प्रकार ऐसे बहुत से व्यवहार हैं कि जिन के लिये यह सभा का प्रबन्ध होना आवश्यक है। और शरीर सब के अनित्य हैं। इससे यह काम शीघ्र होना चाहिए। पत्र पहुंचते ही

इसका प्रत्युत्तर लिखें क्योंकि मैं यहां से अब शीघ्र जाने वाला हूं। परन्तु पांच दिन पहले एक पत्र और भेजूंगा। यदि इतने में उत्तर यहां आजाय तो अच्छा है। और सब से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

मिति आश्विन कृष्ण ४ सं० १९४० ।*

{दयानन्द सरस्वती}

जोधपुर राज मारवाड़।

ओम†

ओं श्रीगणेशाय नमः। अथार्क्षमतभञ्जनं प्रारभ्यते।

रावलपिंड्यधि[2]वासी लक्ष्मी[3]रामाभिधो द्विजः कश्चित्।
द्विजो विद्वान्।

नत्वा गणपत्यादीनक्षमतस्य खंडनं[4] कुरुते॥ १॥

---

* २० सितम्बर १८८३।

†सन् १८७७ के अन्त में स्वामी दयानन्द सरस्वती रावलपिण्डी में थे। वहां एक पण्डित लखिराम रहता था। उस ने स्वामी जी को फुलसकेप के पूरे ६ पृष्ठों पर एक पत्र शास्त्रार्थ के लिए लिखा। श्री स्वामी जी ने उसी पत्र पर स्वलेखनी से उस की अशुद्धियां आदि निकालीं। कहीं २ उत्तर के लिए उपयोगी टिप्पणी भी लिख दी। वह संशोधित मूल पत्र भक्त ईश्वरदास जी एम० ए० ने मुझे दियाथा। मैंने उसी मूल पत्र का कुछ भाग ऊपर छाप दिया है। नीचे श्री स्वामी जी का संशोधन है।

(१) [श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का संशोधन] (२४०)

१ असभ्यकथन। २ अथ से अशुद्ध। ३ लखि०। ४ एकमात्रा अधिक होने से श्लोक शुद्ध नहीं। २७ मात्रा होने में २८ मात्रा करना अशुद्ध है।

तावन्मध्यस्थे[5]स्वामिसंपद्गिरिसंमत्या सम्मुखमस्माद्विवादो भवतानंगीकृतो तः पत्रोल्लेखने वयं प्रवृत्ताः स्म । हे विद्वन् यत्वं[6]योक्तं शतपथब्राह्मणादिभागः पुराणमुच्यतेतो अष्टादशपुराणानि पुराणशब्दाभिधेयानि इति । तदसत् । प्रमाणाभावात् । यतः पूर्वमीमांसा[7]यामुक्तं—"वेदेषु ब्राह्मणं विध्यर्थवादभूतं, मन्त्रस्तु कर्माङ्गभूतद्रव्यदेवता स्मारकः इत्यत्र ब्राह्मणस्य वेदत्व[8]मवसीयते । अत एव शतपथादीनां बहुषु वाक्येषु "अनुस्वारस्य ॐ छन्द[9]सीति, सूत्रेण ॐकारादेशो दृश्यते । तथा च छन्दःशब्देन[10] वेद एवोच्यते तत्रैव तद्दर्शनात् नान्यत्र[11] । वेदे तु छन्दो लक्षणाभावेनापि छन्दः शब्द[10]प्रयोगात्,। तथा च पूर्वमीमांसासूत्रम् "स्यां[12]दाम्नायधर्मित्वाच्छन्दसि नियमः, इति । छन्दोवंते[12] सूत्राणि इति च । छंदां[12]ॐसि जज्ञिरे तस्मादिति श्रुतेश्च ॥,

.... ओंकारादिषु छन्दोलक्षणाभावे पि[13]......... वेद एव ॐ[14]कारप्रयोगः नतु छन्दोमात्रे......... अथ च अष्टाध्यायीसूत्रम्[15] 'हृग्रहोर्भश्छन्दसीति, सूत्रे[15] छन्दो वेद एवोच्यते.........

---

५ संपतगिरि जी का मध्यस्थ होना असम्भव है, विद्या कम होने से । ६ यत्त्वयोक्तं । ७ इस की टीका में । ८ वेदव्याख्यानत्वम् । ९ अपाणिनीयम् । १० शब्देन । ११ अशुद्ध है एवकार होने से । १२ पंडित इन का अर्थ नहीं जानते । १३ पि । १४ अशुद्ध है । १५ नहीं है ।

ब्राह्मणानितिहासान्[16][17]......अथर्वसंहितायां इतिहासश्च[18] पुराणञ्च ......ऋचः[18] सामानि छन्दांसि पुराणम्......चतुर्थमितिहासः पुराणं[19] पञ्चमं वेदानां वेदं......अत्र पुराणशब्दस्य नपुंसकत्वेन[20] नो इतिहासादीनां विशेषणत्वं........इतिहासपुराणाभ्यां[21] वेदं समुपबृंहयेत्......अधीयंते पुराणं ये धर्मशास्त्राणयथेति चेति[22]... आख्यानानितिहासांश्च[23] पुराणान्यखिलानि[24] चेति......भेपजमिति- श्रुते[25] मनुस्मृते[26] प्रामाण्यं......अर्धजरतिन्यायस्याप्रामाण्यात्[27]...... ......अन्यच्च नारायणोपनिषदि[28] पाषाणमणिसुवर्णमयविग्रहेषु[29] पूजा पुनर्भोगकरीति स्पष्टार्थः........के ते पितरः। सोम्यासः सोम्याः सोमपा[30] इत्यर्थः।

इमहो[1]भेश[2]कन्द[3]सी[4]ति । १६ पंडित इन का अर्थ नहीं जानते । १७ ब्राह्मणा- नीतिहा० । १८ पंडितों ने इस का, और इस का अर्थ नहीं जाना है । १९ पंडितों ने इसका भी अर्थ नहीं जाना है । २० यह बात अशुद्ध है । २१ — — । २२ पंडितों ने इन सब का अर्थ नहीं जाना है । २३ —नीति० । २४ —णानि खि— । २५ श्रुतेः । २६—स्मृतेः । २७ —जरतीयन्या० । २८ इसमें कहीं नहीं है । २९ पाषाणलोहमणि- मृन्मय— । ३० सोम्पा ।

(१) [उर्दू पत्र] (२४१)

लाला मनसुख र[ाय जी आनन्दित रहो]

बाद आशीर्वाद के वाज़ेह हो [कि यहां खैरीयत है] हाल यह है कि अब हम तार [के द्वारा सूचना नहीं देंगे] पीर को प्रातः काल यानी सुहब के [७½ चलकर १०½ बजे] अमृतसर के स्टेशन पर पहुं[चेंगे । और अगले] रोज़ यानी तारीख १६ माह हाल [को········की तरफ] रवाना हो जावेंगे । अगर मौक[ा मिला तो एक] व्याख्यान भी दे देंगे । व [··· ···] जो कुछ हाल किताबों की निसबत को [··· ···] जुबानी कह दिया जावेगा । अ[ौर ··· ···] से ग़लती से बावा नारायणसिंह जी [··· ···] †में भूल हुई है और नारा[यण सिंह जी के नाम का [··· ···] आ गया हो तो···हज़ा के साथ अर्साल होता है । मकान का बन्दोबस्त वास्ते एक शब और निस्फ रोज़ अव्वल के कर लेना

---

* अमृतसर निवासी पं० रुद्रदत्त जी ने यह पत्र अकतूबर १६२६ में हमें दिया था। इस का आधा भाग लुप्त हो चुका है। शेष भी बहुत जीर्णावस्था में है। हम ने इस के जीर्णभाग जोड़ दिये हैं। इस के एक ओर उर्दू और दूसरी ओर उर्दू और अंगरेज़ी दोनों हैं । उर्दू भाग हाशियों पर भी लिखा हुआ है। लुप्त अंश की पूर्ति कहीं २ कोष्टों में की गई है।

† यहां से आगे का लेख हाशिये पर है।

[चा] हिये । एक रोज़ से ज्या [दा]··· ···
··· ··· ··· ··· ···

[··· ···]* वगैरा की गुफतगू जुबानी होगी। सब [सभासदों से आशी]र्वाद् कह देना। बाकी खैरीयत है। ज्यादा आशीर्वाद।

११ अकतूबर १८७७ सन् इस्वी।

राकम

[स्वामी]जी महाराज

I will start for Umr[itsar ... ... on]
the 15th inst. by m[orning train]
at 7-30 A. M. and [will reach there]
at about 10-30 [A. M. ... ...]
Please keep a h[ouse there for]
my short stay of [a night and half day]
[sure] ly, for the occ[assion ... Accept]
my best ashee[rbad]

Sd. दयानन्द स[रस्वती]

---

* यहां से पृष्ठ की दूसरी ओर का लेख आरम्भ होता है। इस पंक्ति का पूर्वार्ध पत्र फट जाने से लुप्त हो चुका है। यह पत्र जालन्धर से लिखा गया प्रतीत होता है।

(१) (३०)

स्वस्ति श्रीमच्छ्रेष्ठोपमार्हाय विद्वद्वर्य्याय वैदिकधर्ममार्गैक-निष्ठाय निगमोक्तलक्षणप्रमाणैर्धर्म्यकर्मोपदेशप्रवर्त्तितस्वान्तायै-तद्विरुद्धस्योच्छेदने प्रोत्साहितचित्ताय सद्विद्वद्भ्योऽभ्यानन्दार्थं सूक्तसमूहवाक्यानुवाक्यप्रयुक्तवक्तृत्वाभ्यासशालिने सर्वदा विद्यार्जनदानोत्कृष्टस्वभावाय लब्धार्थविपश्चिन्मानायास्मत्प्रिय-वराय श्रीयुतश्यामजि[कृष्ण]वर्म्मणे दयानन्दसरस्वतीस्वामिन आशिषो भूयासुस्तमाम। शमत्रास्म[दीयम]स्ति तत्रत्यं भवदीयं नित्यमेधमानं चाशासे।

बहुमासाभ्यन्तरे भावत्कपत्रानागमेन चित्तानन्दाह्रासात् पुनरानन्दप्रजननायेदानीमेतस्मिन्निम्नलिखिताभिप्रायाणां भवतः स[का]शात् सद्यः प्रत्युत्तराभिकांक्षिणो··· मया पत्रं श्रीमत्सनीडं प्रेष्यते।

तत्र कीदृग्गुणकर्मस्वभावा मानवा भूजलवायुभक्ष्यभोज्य-लेह्यचूष्याः पदार्थाश्च सन्ति। अतो गत्वाऽद्यपर्यन्तं तत्र भव-दात्मशरीरारोग्यमस्ति न वा। यदर्था यात्रा कृता तत्प्रयोजनं प्रतिदिनं सिध्यति न वा। भवत्समर्य्यादे तत्रत्याः कति जनाः संस्कृतमधीयते कं कं ग्रन्थं च। तत्र भवतः कियती मासिकी प्राप्तिर्व्ययश्च। कस्मिन् कस्मिन् समये पठ्यते पाठ्यते चिन्त्यते

च । ततोऽत्र कदाऽऽगमनाय निश्चितं कृतमस्ति । किमिदं यथात्र सद्धर्मोपदेशजन्या भवत्कीर्त्तिस्तूरणं देशदेशान्तरे प्रसृता तत्र कुतो न जाता । जाता चेद्यतो दूरदेशस्थास्ति, तस्मादस्माभिर्न श्रुता किम् । किं वैतत्करणेऽवकाशो न लब्धः । एवं चेद् यदा भवतः (?) पठनपाठने सम्पूर्य्य (?) वेदार्थोत्कर्षाभिप्रायसूचकानि वक्तृत्वानि तत्रत्येषु देशेषु कृत्वैवात्रागमने भद्रं नान्यथेति निश्चयो मेऽस्ति । कुतः । धनलाभात् सत्कीर्त्तिलाभो महान् शिवकरोस्त्यतः । श्रीयुतप्रियवराध्यापकमुनियरविलियंस[मो]न्नमूलराख्यानामधुना वेदादिशास्त्राणां मध्ये कीदृङ् नि[श्चयः] प्रेम तदर्थप्रचारा[य] चिकीर्षाऽस्त्यन्येषां च । तत्र नन्दनपुर्य्यां काचिद् वैदिकी शा[खा]ख्या थियोसोफीकलसभाप्रेरिता सभास्तीति श्रुतं तत्तथ्यं न वा । भवता [कदा]चिच्छ्रीमतीराजराजेश्वरी महाराज्ञी पारलीमेंटाख्या सभा च दृष्टा न वा । भवता श्रीमत्प्रियवराध्यापकमुनियरविलियंसाख्यादिभ्यो ऽस्यादरेण मन्नियोगतो नमस्त इति संश्राव्य कुशलं पृष्ट्वा ते श्रुत्वा यद्यत्प्रत्युत्तरं ब्रूयुस्तत्तदन्यच्च यद्यद्युक्तं च लिखितुं तत्तस्य सर्वस्य च (?) प्रत्युत्तराणि यद्यस्यानुक्तप्रश्नस्यापि लेखार्हमुत्तरं वैतत्सर्वं विस्तरेण संलिख्याविलम्बेन पत्रं मत्सन्नि[धौ] प्रेषणीयमेवेत्यलमधिकलेखेन विचक्षणोत्कृष्टेषु ॥

मुनिरामाङ्कभूम्यब्द आषाढस्य शुभे दले ।
षष्ठ्यां हि मंगले वारे पत्रमेतदलेखिषम् ॥

इस पते से पत्र भेजना। बनारस लक्ष्मीकुण्ड मुंशी बख्तावर सिंहजी मैनेजर वैदिक यन्त्रालय के द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी के समीप पहुंचे॥

इदं वैदिकयन्त्रं स्वाधीनं नवीनस्थापितमस्मा[भि] राय्यैर्वेदादि-शास्त्राणां मुद्राऽक्षरसंसिद्धय इति वेद्यम्।

{ दयानन्द सरस्वती }
(मेरठ)

---

(१) **विज्ञापन॥** (२४३)

विदित हो कि जो विक्रम संवत् १९३७ तदनुसार सन् १८८० में मुं० इन्द्रमणि जी रहीस मुरादाबाद का मुसल्मानों से विवाद हो कर मुंशी जी पर ५००) रु० मेजिस्ट्रेट मुरादाबाद ने जुर्माना किया। तब उसपर आर्य्यजनों ने उस मामले को अपना समझ सहाय की थी। वह मामला तभी हो चुका था। परन्तु मेरठ में उस समय इस के लिये यह नियम नियत किया गया था कि मुनशी जी के मुकद्दमे में से जितना धन बचे वह अच्छे प्रतिष्ठित साहूकार के यहां ॥) व्याज पर रक्खा जाय। जब कभी ऐसा ही किसी अन्य वैदिक धर्म्मावलम्बी आर्य्य का अन्य मतवादियों से धर्म विषय का विवाद हो के कचहरी में मुकद्मा जाय और वह असमर्थ होय तो इन्हीं रुपयों से उस की सहाय की जाय। इस नियम को मुनशी जी

ने भी स्वामी दयानन्दसरस्वती जी आदि के सम्मुख मेरठ में स्वीकार कर लिया था। परन्तु शोक का विषय है कि उक्त मुनशी जी ने ऐसे उत्तम नियम को तोड़ अब हिसाब नहीं देते। और उलटा चौर कोतवाल को दण्डे इस के सदृश लाला रामशरण दास रईस मेरठ और स्वामी दयानन्दसरस्वती जी पर मिथ्या दोषारोपण करते हैं। इस कारण मेरठ आर्य्यसमाज के आय व्यय का हिसाब प्रकाश करना पड़ा, जिस्से मिथ्या भ्रम जैसा मुनशी जी को हुआ वैसा किसी अन्य सज्जन आर्य्य पुरुष को न होय. और मुं० इन्द्रमणि जी का सत्यासत्य इस हिसाब और मुनशी जी के विज्ञापन को देख कर सब पर प्रगट हो जायगा। मुनशी जी लिखते हैं कि बहुत आर्य्यजनों ने मेरे मुकद्दमे की सहाय में मेरठ समाज और स्वामी दयानन्दसरस्वती जी के पास धन भेजा था। "उस में केवल ६००) रु० मेरे पास पहुंचे। बाकी उन के पास रहे।" परन्तु इस मेरठ के मिती वार क्रमानुसार हिसाब देखने से निश्चय होता है कि मुनशी जी के पास उन्हीं के मामले में ६६३।॥=)॥। मेरठ समाज से पहुंचे हैं। न जाने मुनशी जीने ६०० रु० क्यों अपने विज्ञापन द्वारा प्रकाश किये। इस बात से तो मुनशी जी की असत्यता प्रगट होती है। यदि मुनशी जी का कथन सत्य है तो इन रुपयों के सिवाय लाला रामशरणदास वा स्वामी जी के पास किसी ने और रुपये भेजे होंय, और उन के पास उन की हस्ताक्षरी सहित रसीद होय शीघ्र प्रकाश करैं अथवा करवावें, क्योंकि सांच को आंच कहां। और जो मुनशी जी ने हिसाब के छपवाने

में ढच पच की वा और ही कुछ राग गाने लगे तो यह उन के लिये पूरा कलङ्क है। इस के निवारणार्थ उनको अवश्य चाहिये कि जब २ जितना २ खर्च हुआ है यथावत् मिती वार छपवा देवें ओर शेष धन आर्य्यसमाज मेरठ में सर्वोपकारार्थ भेज दें। पूर्व स्वीकृत नियम को भी सत्य करें तो बहुत अच्छी बात है, नहीं तो रुपये गये हुये आभी जाते हैं परन्तु धर्म्मयुक्त कीर्त्ति गई हुई कभी नहीं आती। संभावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते सत्पुरुष को मरण से अपकीर्त्ति बहुत बुरी समझनी चाहिये। यदि हमारे आर्य्यजनों विशेष उपदेशकों का आरम्भ से मृत्यु तक एकसा सत्याचरण रहे तो देश की वड़ी ही उन्नति हो। सर्वशक्तिमान् परमात्मा आर्य्यावर्त्त देश पर कृपा करे जिस से हमारे आर्य्यावर्त्तीय उपदेशक अपने किये हुये उत्तम उपदेश को लोभादि दोषों से कलंकित न करके आद्योपान्त पर्य्यन्त शुभाचरण से देश की सुदशा बढ़ाया करें। (अलमति विस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु। इति जीवन्तमानन्दः॥

विक्रमी संवत् १९३७ तदनुसार सन् १८८० ई।

नकल हिसाव जो कि मेरठ के समाज और मुनशी इन्द्रमणि जी के विषय का है॥

(आमदनी)	(खर्च)
३५०) मार्फत आर्य्यसमाज लाहौर यह तफसील लाहौर के रुपयों की है कि	।)॥ रजष्ट्री मुनशी इन्द्रमणि साहब के पास भेजी ता० ७ अगस्त सन् १८८०

३०) आर्य्यसमाज मुलतान

१००) आर्य्यसमाज झेलम

११५) आर्य्यसमाज लाहौर

१०५) मेम्बरान वियास

५०) आर्य्यसमाज अमृतसर

१००) आर्यसमाज रुड़की

१००) आर्यसमाज फरुखाबाद

२३३॥≡) आर्यसमाज फीरोजपुर

१५०॥-) आर्यसमाज गुर्दासपुर

२४५॥) आर्यसमाज मेरठ। इस रकम में मेरठ शहर के और मेरठ के जिला तीन चार महापुरुषों का जो समाज के मेम्बर नहीं है चंदा शामिल है दीया हुआ।

११) ला० केवल कृष्ण

३००) हवालय मु० इन्द्रमणि मार्फत ला० श्यामसुन्दर रईस मुरादाबाद ता० ७ अगस्त सन् १८८०

११।) किराया रेलगाड़ी मेरठ से मुरादाबाद तक ४ आदमियों का तारीख १४ अगस्त १८८०।

६) किराया रेल बरेली से मेरठ और बरेली से मुरादाबाद तक।

।-) ला० शादीराम के खत का महसूल जो इलाहाबाद से आया।

॥) किराया गाड़ी जो हुल साहेब बैरिस्टर के पास मेरठ में जाते समय दिया गया ता० १४।८।८०।

२३) मुकदमे पहिले में खर्च हुआ मुकाम मुरादाबाद

१३८॥) लाला रकुन राय व लाला मुरलीधर ओरंगाबाद से।

१३६॥।) पांड़े रामदीन सेकिंड मास्टर दारजिलिंग॥

१५१६) संख्या समपूर्ण एक हजार पांच सौ सोलह रुपये॥

इस का हाल मु०जी को मालूम है।

१७६)। खर्च रवानगी मेरठ से इलाहाबाद तक ता० ६ सितम्बर सन् १८८०॥

३००) वजरिये नोट के मुन्शी जी के पास भेजे गए।

।-) खत रजिस्टरी महसूल डाक सहित।

३००) वजरिये हुंडी के मुन्शी जी के पास भेजे गये॥

१॥) हुंडियावन दिये गये ता० ३०।१०।८०॥

३॥) किराया रेल झंडू नोकर मेरठ से अलीगढ़ तक मय वापिसऔर खुराकके।

-) मु० इन्द्रमणि सा० के खत का महसूल

९६३॥।-)॥। संख्या सम्पूर्ण॥

उक्त बाकी ५५२-) रु० का व्योरा इस प्रकार से है॥

११) आर्यसमाज मुलतान	आर्यसमाज मुलतान के लिखने अनुसार उपदेशक मंडली के धन में जमा किया गया।
३६।≡) आर्यसमाज जेहलम	३६।≡) आ० स० जेहलम के लेखानुसार वापिस किये गए॥
४१॥।=) आर्यसमाज लाहौर	४१॥।=) आ० स० लाहौर तथा
३८।) मेम्बरान वियास	३८।) तथा तथा तथा
१८।) आर्यसमाज अमृतसर	१८।) अमृतसर आ० स० के लेखानुसार आर्यसमाज जेहलम को भेजे गये।
३६।≡) आर्यसमाज रुड़की	३६।≡) आ० स० रुड़की के लेखानुसार उपदेशक मंडली धन में जमा किये गये॥
३६।≡) आर्यसमाज फरुखाबाद	३६।≡) आ० स० फरुखाबाद के लेखानुसार किसी उचित कार्य में खर्च करने के लिये यहां जमा हैं।
८५-)। आर्यसमाज फीरोजपुर	८५-)। आ० स० फीरोजपुर के लेखानुसार वापिस भेजे गये॥

५४।।=)	आर्यसमाज गुरदासपुर	५४।।=)	आ० स० गुरदासपुर के तथा तथा
८६।।)	आर्यसमाज मेरठ	८६।।)	आ० स० मेरठ के विचार अनुसार अंतरंग सभा के वापिस लिये गये ॥
४-)	लाला केवलकृष्ण	४-)	लाला केवलकृष्णके जवाब न आने से मेरठ समाज में जमा हैं।
५०≡)	लाला रकुनराय वा ला० मुर्लीधर	५०≡)	ला० रकुनराय वा ला० मुर्लीधर के पास रजिष्टरी खत भेजा था परंतु खत पता न लगने से लौटआया इसलिये इन के रुपये यहां जमा हैं ॥
४६।।।≥)	पांडे रामदीन मास्टर	४९।।।=)	पां० रामदीन मा० के लेखानुसार इस रुपये की उनके पास पुस्तकें भेजी गईं ॥

५५२-)। संपूर्ण संख्या

पाठक गण ! अब देखिये यह अपराध भी मुं० इन्द्रमणिजी पर हुआ, कि यदि मुन्शीजी पूर्व स्वीकृत नियमानुसार वर्तते तो उक्त ५५२-)। ये रुपये भी सर्वोपकार आर्य्य धर्म रक्षा में लगते और आर्य्यसमाज मेरठ मुन्शीजी के अन्यथा व्यवहार पर शोक

करके हिस्सेवार वैदिक धर्म रक्षणार्थ धन को पुनः दाताओं के पास क्यों फेर देते। जैसे थोड़े से उदार आर्यों ने वैदिकधर्मोपदेशक मंडली के लिये अपना २ भाग दे दिया वैसे सब धन आर्य्यावर्त देशोन्नति में लगता तो कितनी अच्छी बात होती। परन्तु ऐसी २ तुच्छ बातों से देशहितैषी महाशय जन देशोन्नति करने में उदासीन न हों किन्तु जब बुरे बुराई नहीं छोड़ते तो भले भलाई क्यों छोड़ें।

द. दयानन्द सरस्वती

पत्रांश

और मुझ को निश्चय है कि आप के आने से यहां बड़ा आनन्द और उन्नति होगी।...................................*

निश्चय है कि आप अपने काम पर तत्पर रहेंगे। और श्रीमान् महाराजाधिराज को अति आनन्दित करेंगे। और अपने पुरुषार्थ स्वाभाविक सद्गुणों और उत्तम कामों से अपनी कीर्ति को

* यह पत्र भाई ज्वाहरसिंह के नाम लिखा गया था। भाई ज्वाहरसिंह से ऊपर मुद्रित अंश रद्दे बुतलान पृ० ६८ पर छापा है।

बढ़ावेंगे ।...

मिति ज्येष्ठ कृष्ण १० सन् १८८३ जोधपुर' ।

†.............. ....

सब बातें संसार में मिल जाती हैं, परन्तु ऐसे मनुष्य का मिलना असम्भव नहीं तो अति कठिन तो अवश्य है।................

मिति भाद्रपद सुदी ५ बृहस्पतिवार संवत् १९४० ।

....

Though I am very anxious that my autobiography which you are publishing in your journal, should be completed, I have not yet been able to give the necessary time to it. But as soon as possible I will send the narrative to you ....‡

---

*यह पत्र भाई ज्वाहरसिंह के नाम लिखा गया था । भाई ज्वाहरसिंह जी ने ऊपर मुद्रित अंश "रद्दे बुतलान" पृ० ६८ पर छापा है ।

† यह पत्र राजाधिराज श्री शाहपुराधीश को लिखा गया था । भाई ज्वाहरसिंह उन दिनों श्रीशाहपुराधीश के प्राईवेट सैक्रेटरी थे । प्रतीत होता है, नौकरी छोड़ते समय वह इस पत्र की नकल अपने साथ ले आये । ऊपर मुद्रित अंश भाई ज्वाहरसिंह ने "रद्दे बुतलान' के पृ० ६८,६९ पर छापा है ।

‡ यह पत्रांश थ्यासोफिस्ट ऐप्रिल सन् १८८० के पृ० १६० पर छपा है । इस से पहले निम्नलिखित सूचना है । आवश्यक समझ कर वह भी छापी जाती है — देखो अगला पृष्ठ ।

THE FOOLISH EMBARGO LAID UPON SWAMIJI DAYANAND Saraswati by Mr. Wall, the Benares Magistrate, has at last been raised, and that learned and eloquent Pandit was to have resumed his lectures on the evening of the 21st March.* Before granting the permission–which the Swami ought never to have been obliged to ask–Mr. Wall had a conversation of nearly an hour with him. The excuse, offered by the Lieutenant Governor for the action in the premises, was that it was not safe for the Swami to lecture in the Mohuram holidays ! The subject of the opening discourse was "The Creation."

* इस लेख से प्रतीत होता है कि यह पत्र १९ या २० मार्च सन् १८८० को लिखा गया था ।

* ओ३म् *

पुस्तक की संख्या...............

पुस्तकालय–पञ्जिका–संख्या

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है । कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता । अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये ।